8 साल बेमिसाल
सामाजिक गतिविधियों का लेखा जोखा
सबसे पहले सबसे तेज

मासिक
कुमावत इंडिया
कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com
Website : www.kumawatindiapatrika.in

वर्ष-8 | अंक-5 | दिसम्बर 2025 | पृष्ठ-32 | मूल्य : ₹ 20.00

मकर सक्रान्ति, बसन्त पंचमी और गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

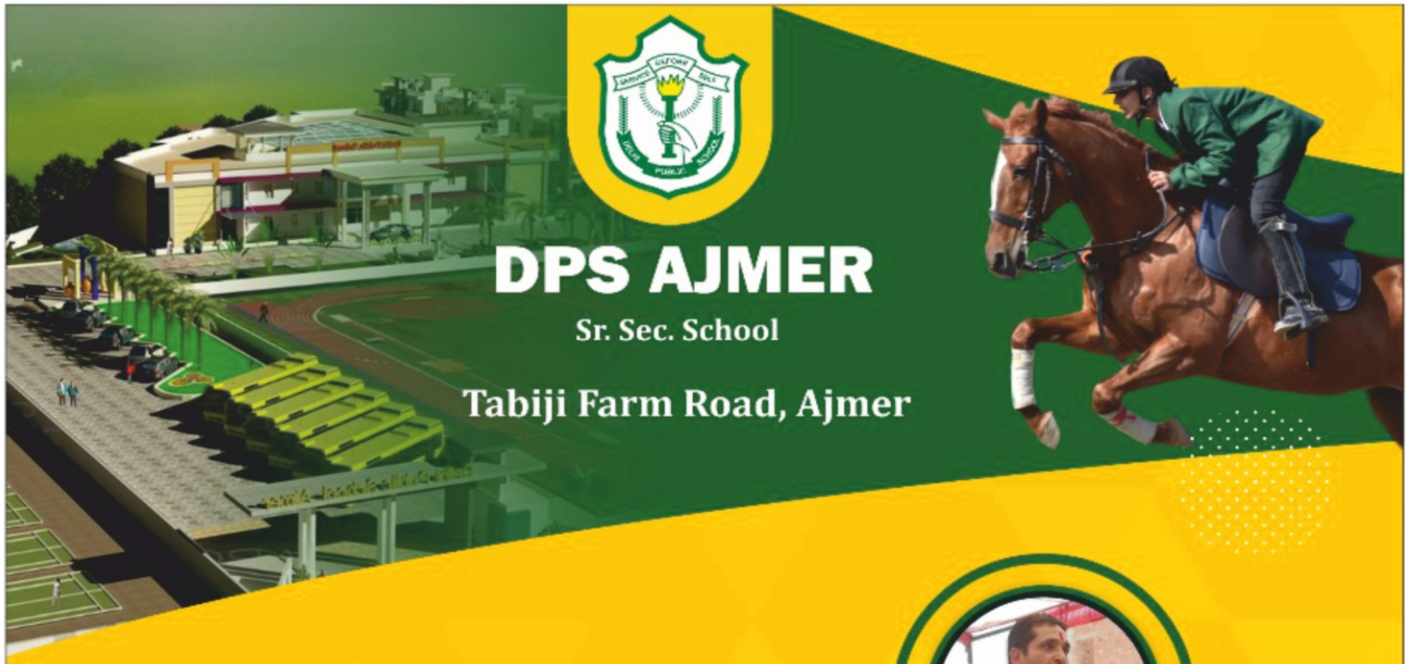

DPS AJMER

Sr. Sec. School

Tabiji Farm Road, Ajmer

ESTABLISHING

The Right Environment

We believe in building a modern culture using both traditional & next-generation tools. So, your child's natural talents can blossom.

SHASHI PAL KUMAWAT
Chairman

Archery & International
Level Shooting Range

Swimming Pool
"DPS Wave Pulse"

Horse Riding Club
Won Laurels at the National Level

Our Activities

Skating Rink

Karate Club
We have won Karate Championship at District, State & National Level.

Art & Craft

Tabiji Farm Road, Near D.D. Puram, Beawar Road, Ajmer

Web: www.dpsajmer.in E-Mail: info@dpsajmer.in

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

संरक्षक	:	जयकिशन सोकिल	**मो. 9829125428**
अध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	**मो. 9887440666**
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	**मो. 9414074376**
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	**मो. 9414810584**
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	**मो. 9549656438**
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	**मो. 9829056063**
		रमेश कुमावत (गेदर)	**मो. 9414554322**
		चेतन बालोदिया	**मो. 9414052736**
		मोहन लाल कुमावत	**मो. 9887557425**
मुख्य सलाहकार	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	**मो. 9414994006**
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	**मो. 9414263429**

सम्पादक मण्डल : रमेश चन्द कुमावत (गैदर) सम्पादक -9414554322, **सह-सम्पादक :** रमेश तोंदवाल 9460870125 एवं प्रिया मारवाल 9408093778 तथा मनीष कुमावत 9660702083, रवि कुमावत 9829600411, लक्ष्मीनारायण सिरस्वा 9829791846, उर्वशी बालोदिया 9351680888, **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, अशोक कुमावत -9352070394, श्रीमती शशि कला बालोदिया, मुकेश कारगवाल 9828606056 व राजसिंह बधानिया 9414238799 **उप-कोषाध्यक्ष :** खेमचंद खड़गटा 9829140629 **विधि सलाहकार :** राकेश कुमावत एडवोकेट 9829152561 विशेष आमंत्रित सदस्य : मनोज सिरस्वा।

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397 दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580 सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444 वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299 मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188 जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301 कोटा :** चन्द्र प्रकाश कांकर **मो. 9214983402 सीकर :** रामगोपाल भोड़ीवाल **मो. 9610784657 उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** जगदीश मामोडिया **मो. 9024805687 ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493,** रवि बेडवाल **मो. 8290303003 बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957 सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812 इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645 किशनगढ़ :** प्रभुदयाल तुनगरिया **9680931428**

प्रोसेसिंग व मुद्रक : राज ब्लॉक्स, 22 गोदाम, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ठ संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-650

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ठ संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर रसीद प्रेषित करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित, सम्पादक रमेश चंद कुमावत।

सम्पादकीय

साथियों, साल 2025 अलविदा होने जा रहा है, जो दिन बचे हैं उनमें हम मनन करें कि क्या-क्या कार्य शेष रह गये जो करने थे। हो सके तो इन्हें पूरा करें और फिर भी शेष रह जायें तो अगले साल के कार्यों की सूची में शामिल करें। हर वर्ष नया साल नया जोश, नई उमंग और नवीन ऊर्जा लेकर आता है। साल 2026 भी ऐसा ही हो और आपके सारे सपने पूरे हों, यही हमारी **शुभकामनाएं हैं।**

आप नये साल में किये जाने वाले कार्यों के लक्ष्य एवं प्राथमिकता निर्धारित करके कार्य प्रारम्भ करें। आपके संकल्प, अनुशासन, दृढ़निश्चय तथा योजना से कार्यों की सिद्धी होना तय है। यह हमें और अधिक ऊर्जा बनाती है और नवीन कार्य करने और अधिक जोखिम लेने की शक्ति का संचार होता है। इससे हम विकास के पथ पर बढ़ते ही जाते हैं। पर दिशा और दृष्टि सही रखना जरूरी है। सकारात्मक सोच एवं सही नीयत से किया गया हर कार्य में सफल होना सम्भव होता है।

नये साल में अनेक त्यौहार आ रहे हैं जैसे **मकर संक्रांति, बसंत पंचमी, गणतंत्र दिवस आदि, इन सभी के लिए आपको शुभकामना।** इन त्यौहारों और महत्वपूर्ण अवसरों का आप भरपूर आनन्द लें। पतंग उत्सव पर बच्चों का विशेष ध्यान रखें। परिन्दों के पंख आदि पतंग की डोर से कहीं कट न जाए। इस त्यौहार पर तिल-गुड़ एवं गजक तथा खीर-फीणी के साथ गरमागरम पकोड़ों का आनन्द लेना न भूलें।

हम सभी आपसी सौहार्द बनाकर रखें और रिश्तों की डोर को और मजबूत कर सुखी एवं समृद्ध हों। नकारात्मकता एवं कटुता को हटाने का संकल्प लें और सकारात्मकता एवं मिठास को अपनाऐं। हमारा समाज शिक्षा, सरकारी नौकरियों एवं व्यवसाय में आगे बढ़े। सरकारी योजनाओं का लाभ भी पात्र लोगों को मिले इसके लिए सामाजिक संस्थाओं के स्तर पर प्रयास किए जावें। स्थानीय निकायों (पंचायतों और नगरीय निकायों) के चुनाव भी वर्ष 2026 में होना प्रस्तावित है। समाज के ऊर्जावान कार्यकर्ता तैयारी करें और योजना एवं लक्ष्य बनाकर धरातल पर कार्य आरम्भ कर दें तो सर्वसमाज का सहयोग मिलना स्वभाविक है। हमारा राजनीति में वर्चस्व बढ़ेगा तो समाज प्रगति के पद पर तेजी से अग्रसर होगा। याद रखिये जनाधार बिना कुछ नहीं।

आप सभी समाजजनों को पुन: **नववर्ष 2026 के लिए शुभकामनाएं।**

- रमेश कुमावत (गैदर)

हमारी वेवबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय	3
राष्ट्रीय पुरस्कार कलाकार पवन कुमार कुमावत	
गरूड की मूर्ति ने दिलाया राष्ट्रीय पुरस्कार	5
समाजसेवी स्व. श्री भागचन्द वर्मा (बैरा)	6
प्रधानमंत्री मोदी ने ज्योतिसर में पंचजन्य स्मारक का उद्घाटन किया	6
छात्रावास भूमि का किया पूजन	7
छात्रावास भूखंड निरस्त करने पर कुमावत समाज नाराज	7
वीर सावरकर की प्रतिमा का अनावरण व प्रेरणा पार्क का उद्घाटन	7
जगदीश कुमावत को डॉक्टरेट की मानद उपाधि	7
कुल्फी और फिरनी को मिली वैश्विक पहचान	7
दांतारामढ़ में प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न	8
भीलवाड़ा कुमावत समाज ने प्रतिभाओं का सम्मान किया	8
खेड़ा बालाजी, माधोराजपुरा सामूहिक विवाह 25 अप्रेल को	9
दिवाली स्नेह मिलन समारोह एवं सम्मान समारोह संपन्न	9
तेलंगाना कुमावत समाज की आम सभा सम्पन्न	9
गणतंत्र दिवस (26 जनवरी)	10
जापान ने 1 लाख से ज्यादा ऐसे लोग है जो 100 साल से अधिक उम्र के हैं	10
नया साल: एक नई शुरुआत का जश्न	11
स्वादिष्ट व्यंजन : फिरनी	11
जयपुर की पतंगबाज़ी : राजमहलों से आमजन तक आकाश में उत्सव और संवेदनशीलता का संदेश : पतंग कटे, जिन्दगी नहीं	12
प्रोफेसर बबीता कुमावत का रामस्नेही संप्रदाय पर हुआ शोध पत्र प्रकाशित	13
उद्योगिनी योजना मिल रहा रु. 3 लाख तक लोन	13
बसंत पंचमी: ज्ञान और प्रकृति के नवसंचार का पर्व	14
सिडनी में आतंकी हमला, 15 मरे	14
गोवा में मोदी ने 77 फीट ऊंची भगवान राम की प्रतिमा का किया अनावरण	15
अयोध्या के राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण हुआ	15
कुमावत समाज के लोग कांग्रेस के राजनीतिक पदों पर नियुक्त	16
युवा नितिन नवीन को भाजपा की कमान	16
डॉ. भावेश कुमावत रिसर्च फ़ाउंडेशन ऑफ़ इंडिया के सदस्य मनोनीत	17
बास्केटबाल में दृष्टि का चयन राजस्थान टीम में	17
विधिक सलाहकार कुमावत ने कार्यभार संभाला	17
बीएलओ कुमावत को एसआईआर का कार्य पूर्ण करने पर जिला कलेक्टर ने किया सम्मानित	17
भक्ति, करुणा और सेवा की मिसाल : स्वामिनी सेवा संस्था के 9 वर्ष पूर्ण	18
दीपावली बनी विश्व विरासत	18
डॉ. दुर्गा कुमावत को क्कद्ध.ष्ठ. की उपाधि	18
नेहा कुमावत को क्कद्ध.ष्ठ. की डिग्री	18
सर्दियों में शहद का सेवन सेहत के लिए वरदान	19
स्ट्रोक के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी	20
भक्ति है प्रेम का सर्वश्रेष्ठ रूप	20
स्वामी विवेकानंद: शक्ति, ज्ञान और सेवा का आह्वान	21
16 वर्ष से कम के बच्चों पर इंटरनेट मीडिया पर प्रतिबंध	21
पारिवारिक मूल्य और हिन्दी फिल्में	22
पुस्तक का महत्व	23
विशिष्ट संरक्षक सूची व श्रद्धांजलि	24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची	25
पत्रिका नहीं मिलने पर सम्पर्क करें	26

Squaroid Constructions

Squaroid Design Studio LLP

A complete unique construction Activity
Since 40 years
By Late Shri Suwa Lal Marothiya
(Thekedar Ji) Phulera Wale

Gopal Kumawat
9829158241

Ar. Satyam Kumawat
7737220731

Office :
51-A, Shiv Colony Ist, New Sanganer Road, Sodala, Jaipur-302019
Res.:
44-B, Shiv Colony Ist, New Sanganer Road, Sodala, Jaipur-302019
Email : gopalsquaroid@gmail.com | satyam.kumawat@gmail.com

राष्ट्रीय पुरस्कार कलाकार पवन कुमार कुमावत

गरूड की मूर्ति ने दिलाया राष्ट्रीय पुरस्कार

पवन कुमार कुमावत, निवासी जयपुर (राजस्थान) भारत के अग्रणी एवं वरिष्ठ 'रत्न शिल्प (Gemstone Carving)' कलाकार हैं। उन्होंने मात्र 13 वर्ष की आयु से इस कला में कार्य करना प्रारंभ किया और आज उन्हें इस क्षेत्र में '**42 से अधिक वर्षों**' का समर्पित अनुभव प्राप्त है। उन्होंने यह कला अपने पिता, स्वर्गीय श्री ओम प्रकाश कुमावत से सीखी और किशोरावस्था से ही परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए निरंतर परिश्रम किया।

श्री पवन कुमार कुमावत संपूर्ण रूप से 'हस्तनिर्मित एवं एकमात्र (one-of-a-kind)' रत्न शिल्प कृतियाँ बनाने के लिए जाने जाते हैं। वे अर्ध-कीमती रत्नों जैसे ऐमेथिस्ट, जेड, एक्वामरीन,

टूरमलीन, क्रिस्टल, रोज़ क्वार्ट्ज, एवेंचुरिन तथा कीमती रत्नों जैसे 'रूबी, नीलम और पन्ना' में अद्भुत शिल्प रचनाएँ करते हैं। उनकी कला में हिंदू देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ, दरबार दृश्य, भारतीय इतिहास व पौराणिक कथाओं पर आधारित दृश्य, मंदिर शिल्प, पशु-पक्षी आकृतियाँ, राजपूताना शैली के आभूषण, यूरोपीय शैली की मूर्तियाँ तथा सूक्ष्म ज्वेलरी कार्विंग सम्मिलित हैं।

वे 10 मिमी जितनी सूक्ष्म आकृतियों से लेकर '10 फीट' तक के विशाल रत्न शिल्प बनाने में दक्ष हैं। रत्न तराशना उनके लिए केवल कार्य नहीं, बल्कि 'साधना और उपासना' है। इसके साथ ही वे अपने औज़ार स्वयं विकसित करने, मशीनरी असेंबल करने तथा नई तकनीकों के नवाचार में भी निपुण हैं। उन्होंने अनेक कारीगरों को प्रशिक्षण देकर इस पारंपरिक कला को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उनकी कला, योगदान और उत्कृष्टता को सम्मानित करते हुए उन्हें वर्ष 2023 का राष्ट्रीय पुरस्कार, भारत के राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु प्रस्तुत शिल्प कृति का विवरण

राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए प्रस्तुत यह उत्कृष्ट कलाकृति 'रूबी काइनाइट (Ruby Kyanite)' रत्न में निर्मित एक 'गरुड़ (ईगल)' की मूर्ति है, जिसमें गरुड़ को अपने शिकार पर खड़ा दर्शाया गया है। इस शिल्प में कलाकार ने गरुड़ को इतना सजीव रूप दिया है कि वह जीवित प्रतीत होता है।

यह रत्न भारत के दक्षिणी भागों से प्राप्त होता है और अपनी सुंदर आभा, रंगों तथा उत्तम चमक के कारण शिल्प निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त है। इस संपूर्ण कृति को एक ही पत्थर से, बिना किसी जोड़ के, हस्तनिर्मित किया गया है। इसे पूर्ण करने में लगभग **ढाई महीने** का समय लगा।

निर्माण प्रक्रिया में सर्वप्रथम कच्चे पत्थर पर रेखांकन किया गया, तत्पश्चात मोटा आकार निकालकर धीरे-धीरे अंतिम स्वरूप दिया गया और फिर बारीक नक्काशी की गई। नक्काशी के बाद सतह को स्मूथ किया गया और अंत में पॉलिश कर रत्न को उसकी पूर्ण आभा प्रदान की गई। सौंदर्य और यथार्थता बढ़ाने हेतु गरुड़ की आँखों में लेमन क्वार्ट्ज और ऐमेथिस्ट, तथा शिकार (खरगोश) की आँखों में ब्लैक जैस्पर का प्रयोग किया गया है।

यह संपूर्ण प्रक्रिया कलाकार के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव रही और अंतिम परिणाम उनकी प्रारंभिक कल्पना के पूर्णत: अनुरूप रहा। यह कृति न केवल तकनीकी उत्कृष्टता का उदाहरण है, बल्कि भारतीय रत्न शिल्प परंपरा की जीवंत विरासत को भी दर्शाती है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार की ओर से आर्टिस्ट **पवन कुमावत** को बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भारतीय जनतापार्टी ने जोधपुर देहात दक्षिण के जिला प्रभारी के पद पर श्री निर्मल कुमावत (पूर्व विधायक) को नियुक्त किया है। इस नियुक्ति पर श्री निर्मल कुमावत को 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

समाजसेवी स्व. श्री भागचन्द वर्मा (बैरा)

श्री भाग चन्द जी बेरा के पिता वास्तुशिल्पी श्री बिरदी चन्द बेरा तारकसी तथा माता श्रीमती लाली बाई थी। इनके पिता जीवनपर्यंत जैन मन्दिर के निर्माण कार्य में जुटे रहे। जब श्री भाग चंद छोटे थे तब ही उनके पिता का निधन हो गया था तथा इनकी परवरिश इनकी माता ने ही की। उन्ही से इन्हे समाजसेवा व आध्यात्म के संस्कार मिले। श्री भागचन्द बैरा का 19 दिसम्बर, 2025 को जयपुर में आकस्मिक निधन हो गया। श्री बैरा सहायक नगर नियोजक (जेडीए) के पद से सेवानिवृत्त थे। ये कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति, मालवीय नगर, जयपुर के पूर्व अध्यक्ष रह चुके हैं। इनके कार्यकाल में समिति को जेडीए से मालवीय नगर में भूमि आवंटित हुई तथा उस पर बैसमेंट एवं भूतल के स्ट्रक्चर का निर्माण हुआ। इसके लिए उनके नेतृत्व में समाजबंधुओं ने समाज के भामाशाहों के पास जाकर भूमि एवं भवन निर्माण के लिए सहयोग राशि लेने के अथक प्रयास किए थे जो अत्यन्त सराहनीय हैं। अभी श्री बैरा कुमावत क्षत्रिय पत्र ट्रस्ट के उपाध्यक्ष के पद पर थे। ये श्री हनुमान चालीसा समिति के सक्रिय सदस्य थे तथा इस कार्य को आगे बढ़ाने में इन्होंने संत श्री अमरनाथ के साथ अपनी सेवाएं दी हैं। इनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति किया जाना सम्भव नहीं है।

ये अपने पीछे भरापूरा परिवार क्रमश: धर्मपत्नी रजनी कंवर, पुत्र राहुल, पुत्री रचना एवं भारती तथा तीन पौत्र-पौत्रियों को छोड़कर गए हैं। इनके आकस्मिक निधन से कुमावत समाज स्तब्ध एवं शोकग्रस्त है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वे अपने श्री चरणों में इन्हें स्थान दे तथा शोक संतप्त परिवार को इस हृदय विदारक दु:ख को सहन करने की शक्ति दे।

प्रधानमंत्री मोदी ने ज्योतिसर में पंचजन्य स्मारक का उद्घाटन किया

25 नवम्बर 2025, ज्योतिसर, कुरुक्षेत्र। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गीता स्थली में **पंचजन्य स्मारक** का उद्घाटन किया और गीता की पावन धरा को नमन किया। यह स्मारक महाभारत अनुभव केंद्र परिसर में स्थित है और धर्म और दिव्य ज्ञान का प्रतीक है। भगवान कृष्ण के पवित्र शंख पंचजन्य पर आधारित है।

उन्होंने महाभारत अनुभव केंद्र में स्वागत कक्ष, महाकाव्य का सृजन कक्ष, प्राचीन महाभारत, कुरु वंशावली, द्रोपदी स्वयंवर, भगवान श्री कृष्ण का विराट स्वरूप, गीता श्लोक, कृष्ण भूमिका, कुरुक्षेत्र 48 कोस, दशव अवतार सहित अन्य कक्षों का भी अवलोकन किया।

महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने न्याय और धर्म के साथ खड़े होकर दिव्य पंचजन्य शंख से ही शंखनाद किया था। उन्नत वैदिक शैली के वैदिका पर स्थापित स्वर्णिम शंख पवित्रता, साहस और धर्म की विजय का प्रतीक है। यह पंचजन्य भारत के सनातन संदेश धर्म और दिव्य ज्ञान की याद दिलाता है।

इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और पयर्टन मंत्री डॉ. अरविन्द शर्मा भी मौजूद रहे।

करीब दो करोड़ रुपये की लागत से तैयार इस स्मारक के मूर्तिकार नरेश कुमावत है। यह उस दिव्य शंख पंचजन्य की स्मृति में बनाया गया है जिससे भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध आरंभ होने से पहले उद्घोष कर अर्जुन में उत्साह का संचार किया था। अष्ट धातु से निर्मित यह विशाल एवं दिव्य शंख लगभग 5 से 5.5 टन वजन और चार से पांच मीटर ऊंचा है। यह पंचजन्य भारत के सनातन संदेश, धर्म और दिव्य ज्ञान की याद दिलाता है। इस पर श्रीमद्भगवद् गीता के 18 श्लोक अंकित किए गए हैं।

अनुभव केंद्र परिसर में प्रवेश करते ही पर्यटक विशाल शंख की छटा देखकर अभिभूत हो उठते हैं। यह संरचना आधुनिक स्थापत्य शैली में निर्मित है जिसके डिजाइन में महाभारत कालीन आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक सौंदर्य को समाहित किया गया है। हरियाणा पर्यटन और कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड की ओर से संयुक्त रूप से तैयार किए गए इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य ज्योतिसर को विश्व स्तरीय तीर्थ-स्थल के रूप में विकसित करना है।

स्मारक के पास प्रतिदिन सायं श्री डी मैपिंग लेजर शो भी होगा जिसमें पंचजन्य शंख का दिव्य कंपन, महाभारत युद्ध की पृष्ठभूमि और श्री श्रीकृष्ण की लीलाओं का नवीन तकनीक से प्रदर्शन होगा।

छात्रावास भूमि का किया पूजन

भीलवाड़ा। कुमावत समाज विकास एवं शोध संस्थान द्वारा 100 फिट रोड बजरंग कॉलोनी में छात्रावास भूमि का पूजन किया गया। सचिव समर्थ कुमावत ने बताया कि जिले में निवासरत कुमावत समाज के सहयोग से संस्थान की सदस्यता ग्रहण करवाकर राशि जुटाई गई। एकत्र राशि से भूमि खरीदकर छात्रावास निर्माण की योजना तैयार की गई। बुधवार को प्रात: 8:15 बजे अध्यक्ष शंकर लाल कुमावत के साथ पदाधिकारी एवं सक्रिय सदस्यों ने छात्रावास भूमि पूजन किया। इस दौरान श्रवण लाल कुमावत, बंशी लाल कुमावत, एडवोकेट शोभागमल कुमावत, गजानंद कुमावत, मदन लाल ओस्तवाल, सत्यनारायण मंडोवरा शम्भूलाल नंगरिया, रोशन लाल धनारिया, अर्जुन लाल खटोड, कालूराम कुमावत, एडवोकेट मनोज कुमावत, नरेश कुमार अजमेरा, जगदीश गडवाल, सत्यनारायण बालोदिया, कन्हैया लाल कुमावत आदि मौजूद थे।

छात्रावास भूखंड निरस्त करने पर कुमावत समाज नाराज

भीलवाड़ा। सांवरिया कुमावत समाज के प्रतिनिधिमंडल ने पूर्ववर्ती सरकार की ओर से आवंटित छात्रावास भूखंड को वर्तमान भाजपा सरकार की ओर से निरस्त किए जाने पर विरोध जताया है। समाज के पदाधिकारियों ने मंगलवार को भीलवाड़ा सांसद दामोदर अग्रवाल को ज्ञापन सौंपकर इस अन्यायपूर्ण निर्णय को तत्काल पुन: बहाल करने की मांग की। कुमावत समाज झरनेश्वर महादेव कमेटी के अध्यक्ष सोहनलाल मानणियां, सचिव प्रभुलाल डिडवानिया व कोषाध्यक्ष परमेश्वर लाल बैरा के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने सांसद से अपनी मुख्य मांगें रखीं। इनमें भूखंड की बहाली। निरस्त कर भूखंड का आवंटन तत्काल पुन: बहाल करने की मांग की। ज्ञापन सौंपने वालों में रामलाल छापरवाल, सत्यनारायण मंडोवरा, गजानंद सिंदड़, सुवालाल कुमावत, मथुरा लाल कुमावत, महावीर कुमावत उपस्थित थे।

वीर सावरकर की प्रतिमा का अनावरण व प्रेरणा पार्क का उद्घाटन

12 दिसम्बर। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में देश के यशस्वी माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने वीर सावरकर जी की भव्य प्रतिमा का अनावरण व वीर सावरकर प्रेरणा पार्क का विधि-विधान से उद्घाटन किया।

यह प्रतिमा वीर सावरकर जी के बलिदान, संकल्प और भारत माता के प्रति उनके अखंड समर्पण का प्रतीक रहने वाली है तथा साथ ही आने वाली पीढ़ियों के लिए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की मजबूती तथा उनके आदर्शों को जीवंत रखने की प्रेरणा देती रहेगी।

यह सिर्फ एक प्रतिमा नहीं बल्कि अदम्य साहस, राष्ट्रभक्ति और स्वाभिमान के प्रतीक, वीर सावरकर जी के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि है।

जगदीश कुमावत को इंटरनेशनल ह्यूमन राईट संस्थान द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि

15 दिसम्बर 2025 को जगदीश कुमावत को इंटरनेशनल ह्यूमन राईट संस्थान द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया गया है। यह सम्मान नई दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में बॉलीवुड अभिनेत्री स्नेहा उल्लाल के हाथों प्रदान किया गया। यह सम्मान भवन निर्माण सामग्री में अन्वेषण, भवन निर्माण में नये प्रयोगों को आगे बढ़ाने के प्रयासों, निर्माण लागत में कटौती के विभिन्न प्रयोग, निर्माण सामग्री में नई तकनीकों का प्रयोग, उपभोक्ता की विभिन्न विकल्पों की उपलब्धता और उनके प्रोजेक्ट्स को सुनियोजित करने में सहयोग देने जैसे विशिष्ट कार्यों पर दिया गया है। बधाई।

कुल्फी और फिरनी को मिली वैश्विक पहचान

दुनिया की 100 बेस्ट मिठाइयों की सालाना सूची में भारत की दो पारम्परिक मिठाइयां कुल्फी और फिरनी को भी क्रमश: 49वां और 60वां स्थान मिला है। इस सूची में 97,000 से अधिक वैद्य रेटिंग्स है। कुल्फी ठण्डी और मलाईदार मिठाई है जो भारत में बहुत पसन्द की जाती है। आईने अकबरी में भी इसका नाम मिलता है जो दूध को गाढ़ा करके उसमें चीनी, पिस्ता और मेवा डालकर के बनाई जाती है। वहीं फिरनी दूध और चावल से बनी मिठाई है जिसमें ईलायची, बादाम, केसर भी होती है जो मिट्टी के कुल्हड़ में परोसी जाती है तथा गुलाब की पंखुड़ियों और चांदी के वर्क से सजाई जाती है।

दांतारामढ़ में प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न

सीकर के पलसाना उपखण्ड के अजबपुरा गाँव में कुमावत सेवा समिति द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में केबिनेट मंत्री श्री जोराराम जी कुमावत व राज्यमंत्री प्रहलाद जी टांक शामिल हुए। 10वीं व 12वीं की उच्च अंक प्राप्त करने वाली प्रतिभाओं से संवाद कर उन्हें ऊँचा लक्ष्य निर्धारित कर कड़ी मेहनत वह एकाग्रचित्त पढ़ाई से ऊंचा मुकाम हासिल कर समाज का नाम रोशन करने का आह्वान किया।

विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा, परिश्रम और उपलब्धियों के माध्यम से समाज एवं प्रदेश का गौरव बढ़ाने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों एवं युवाओं को सम्मानित कर उन्हें उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

कार्यक्रम में ओबीसी मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष श्री चंपालाल जी गेदर, सुरेंद्र लांबा जी, सुनील कुमावत जी, IAS जितेंद्र जी देवतवाल, IAS धीरेन्द्र जी, RAS रविंद्र मारवाल, सहित अनेक समाज बंधु उपस्थित रहे।

संस्था अध्यक्ष नेमीचंद किरोड़ीवाल, प्रभु पिपलोदा, नवीन दक्ष सिरस्वा, शिव भगवान सारड़ीवाल आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

भीलवाड़ा कुमावत समाज ने प्रतिभाओं का सम्मान किया

कुमावत समाज विकास एवं शोध संस्थान ने स्नेह मिलन एवं प्रतिभावान सम्मान समारोह आयोजित किया। राजकीय सेवाओं में कार्यरत 144 अधिकारी-कर्मचारियों सहित 248 प्रतिभाओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। अध्यक्षता उंकारलाल कुमावत ने की, जबकि मुख्य अतिथि पूर्व विधायक आसींद नानूराम कुमावत उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में डिप्टी एसपी प्रभुलाल कुमावत, इफ्को के पूर्व मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक बाबूलाल कुमावत तथा उद्यान विभाग के संयुक्त निदेशक महेश चंद्र चेजारा शामिल थे। अध्यक्ष शंकरलाल कुमावत ने बताया कि संस्थान समाज के शैक्षणिक और सामाजिक विकास के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। मुख्य अतिथि नानूराम कुमावत ने ने कहा कि समाज के विकास में शिक्षा, संगठन और नेतृत्व को मजबूत मजबूत करने की आवश्यकता है। उन्होंने से सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। संस्थान के सचिव समर्थ कुमावत ने बताया कि जिले के विद्यार्थियों, खेल प्रतिभाओं और विभिन्न सेवाओं में उत्कृष्ट कार्य करने वाले समाजजनों को समारोह में सम्मानित किया गया। कोषाध्यक्ष श्रवण लाल कुमावत ने संस्थान की आय-व्यय, संचालन एवं भावी योजनाओं का विवरण प्रस्तुत किया। जिला परिषद सदस्य शिवराज कुमावत ने भी आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभाशाली युवाओं को सहयोग करने की आवश्यकता पर बल दिया। संचालन सत्यनारायण मंडोवरा ने किया।

सामाजिक विवादों का निराकरण आपसी सामंजस्य से हो : अधिवक्ता सौभागमल कुमावत, मनोज कुमावत और राजू कुमावत ने सामाजिक विवादों के निस्तारण में आपसी सामंजस्य और कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से समाज को सहयोग देने के अपने विचार व्यक्त किए। मांडलगढ़ इकाई के तहसील अध्यक्ष शंभूलाल कुमावत ने संस्थान के भवन निर्माण में सहयोग करने का आह्वान किया। भामाशाह भंवरलाल सर्वा, सौभागमल कुमावत, बाबूलाल माचीवाल, मनोज कुमावत, रामलाल छापरवाल, बंशीलाल बंबोरिया, शांतीलाल कुमावत, गोपाललाल सिंदड, लक्ष्मण मेरावंडिया, नारायणलाल कुमावत, भेरूलाल कुमावत, जगदीश कुमावत, सुवालाल, विपिन कुमावत, नेमीचंद कुमावत, किशन डूंगरवाल, कैलाश मांडेला और भंवर उपस्थित रहे।

समारोह में इन प्रतिभाओं इन को किया सम्मानित : शिक्षाविद डॉ. नेमीचंद कुमावत ने बताया कि बोर्ड परीक्षा में 85% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले कक्षा 10 के 27, कक्षा 12 के 31 विद्यार्थी और 24 खेल प्रतिभाएं अंतरराष्ट्रीय पावरलिफ्टर दुर्गा कुमावत, 11 राष्ट्रीय, 8 राज्य, 6 जिला स्तरीय खिलाड़ी, 2 आरएएस चयनित युवा, 3 सैन्य अधिकारी, 6 नव नियुक्त चिकित्सा अधिकारी, 6 पदोन्नत प्रिंसिपल, 4 व्याख्याता, 32 अध्यापक, 7 लेखाकार कार्मिक विभाग कर्मचारी, 4 इंजीनियर और 6 नर्सिंग अधिकारी शामिल हैं।

डॉ. रामस्वरूप मंगलाव (कुमावत) उपनिदेशक पदोन्नत

नागर विमानन महानिदेशालय, नई दिल्ली में डॉ. रामस्वरूप मंगलाव (कुमावत) को उपनिदेशक (अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं विधिक मामलात निदेशालय) के प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति मिलने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

खेड़ा बालाजी, माधोराजपुरा सामूहिक विवाह 25 अप्रेल को

कुमावत क्षत्रिय समाज द्वारा प्रसिद्ध तीर्थ स्थल खेड़ापति बालाजीधाम पर आयोजित होने वाले सामूहिक विवाह सम्मेलन को लेकर बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता श्रीमान रामचंद्र जी दंभीवाल ने की। बैठक में समस्त समाजजनों ने सम्मेलन को सफलतापूर्वक संचालित करने हेतु नई कार्यकारिणी एवं पदाधिकारियों का चयन किया गया।

सम्मेलन का आयोजन 25 अप्रैल 2026, **जानकी नवमी** को करने का निर्णय लिया गया। इसमें 21 जोड़ों का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वर और वधु प्रत्येक पक्ष से 31000/- राशि लेने का निर्णय लिया गया।

पदाधिकारियों में अध्यक्ष, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष को यथावत रखा गया। संयोजक पद पर दीपक उदवाल, माधोराजपुरा को मनोनीत किया गया। सम्मेलन को सफल बनाने हेतु विभिन्न समाज बंधुओं व भामाशाहों ने सहयोग राशि तथा उपहारों की घोषणा की:

1. **संपूर्ण भोजन एवं नाश्ता व्यवस्था** — मांगीलाल नानूराम भौरोदिया (पहाड़िया)। 2. **सिलाई मशीन** — रामेश्वर दम्बीवाल (मंडावरा) व रामचंद्र दंभीवाल (अणतपुरा)। 3. **सफारी सूट/शर्ट का कपड़ा** — श्री किशन जी चौरासिया (झाग)। 4. **बेडशीट एवं तकिया खोली** — लल्लू राम महरावडीया (निवाई) **5. बरी का बेस** — ताराचंद मारवाल (जयपुर) 6. **मामा चुनरी + रु.11,000 नगद** — सीताराम उदयवाल (फागी) 7. **लकड़ी का पलंग एवं चौकी** — शंकर लाल उदयवाल (माधोराजपुरा) व योगेश खाटवाल (पहाड़िया) 8. **छत का पंखा**— रघुनाथ उदयवाल (माधोराजपुरा) 9. **स्टील थाली, कटोरी, लोटा + रु.5,100 नकद** — ओम प्रकाश अनावडिया (चौरु) 10. **सोने का लौंग/चिटकी जोड़ी** — पुरुषोत्तम सिरोडिया (चौरू) 11. **तोरण थाम**— भेरु लाल मारवाल (चौरू) तथा 12. **बिजली प्रेस** — गोविंद चौरासिया।

सभी समाज बंधुओं से अनुरोध किया गया है कि वे विवाह योग्य युवक-युवतियोंका समय रहते पंजीकरण करवाकर यथासंभव भागीदारी सुनिश्चित करें, क्योंकि सिर्फ 21 जोड़ों का विवाह इस सम्मेलन में कराया जाएगा।

दिवाली स्नेह मिलन समारोह एवं सम्मान समारोह संपन्न

अजमेर, शांतिपुरा स्थित कुमावत क्षत्रिय सभा संस्थान, अजमेर के तत्वाधान में कुमावत समाज का दीपावली इसने मिलन समारोह एवं विशेष योग्यजन तथा भामाशाह सम्मान समारोह श्री सत्यनारायण मंदिर शांतिपुरा, अजमेर में 16 नवंबर 2025 को उत्साह पूर्वक मनाया गया।

कार्यक्रम का आरंभ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। मुख्य अतिथि श्री सत्यनारायण घोड़ेला एवं श्रीमती कंचन देवी कुमावत का माला, साफा, शाल एवं श्रीफल देकर स्वागत किया गया। संस्था के अध्यक्ष हनुमान सिंह आर्य कुमावत ने आगंतुक समाजजनों का स्वागत एवं अभिनंदन किया एवं अपने कार्य का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तत्पश्चात 8 विशेष योग्यजन को सम्मानित किया गया। संस्था के उप महामंत्री भागचंद सिरस्वा ने स्व रचित कविता की प्रस्तुत दी। महामंत्री श्री शंकर लाल जी घोड़ेला ने सारे कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की, मंच संचालन महामंत्री राजवीर दंबिवाल ने किया अध्यक्ष हनुमान सिंह तुन्दवाल ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। जलपान के पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ।

तेलंगाना कुमावत समाज की आम सभा सम्पन्न

हैदराबाद। कुमावत समाज, तेलंगाना की आम सभा का आयोजन समाज के ज्ञानबाग कॉलोनी स्थित भवन में किया गया। सभा की अध्यक्षता सोनाराम तिलायचा ने की। धर्मीचन्द कुमावत द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, सभा में कुमावत समाज, तेलंगाना की सभी शाखाओं के अध्यक्षों से अपनी शाखाओं के लैटर पेड की एक कापी अध्यक्ष सोनाराम तिलायचा के पास जमा कराने की अपील की गई, ताकि ओबीसी आरक्षण की प्रक्रिया में आसानी हो। धर्माराम डैय्या ने कहा कि ओबीसी आरक्षण के लिए पंजीकृत होना आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत ही सहारणीय कार्य होगा।

बाबूलाल खरनालिया एवं रुपाराम भोपा ने समाज की एकता के लिए कुछ अच्छे नियम बनाने की आवश्यता जताई। भीयाराम मंगलोड़ा ने भी अपने विचार रखे। कोषाध्यक्ष पवन कुमार सांगर ने दो साल का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया, जिसे सर्वसम्मति से पास किया गया। मंत्री ओमप्रकाश सांगर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

गणतंत्र दिवस (26 जनवरी)

भारत का गणतंत्र दिवस हर वर्ष 26 जनवरी को भारतीय संविधान के लागू होने की स्मृति में पूरे देश में बड़े गौरव और उत्साह के साथ मनाया जाता है। 26 जनवरी 1950 को भारत एक पूर्ण गणतंत्र बना और इसी दिन हमारे संविधान ने देश की शासन व्यवस्था को कानूनी रूप से स्थापित किया। यह राष्ट्रीय पर्व प्रत्येक भारतीय के हृदय में देशभक्ति, सम्मान और एकता की भावना को प्रबल करता है।

गणतंत्र दिवस का इतिहास अत्यंत प्रेरणादायक है। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र तो हो गया था, परंतु वह ब्रिटिश शासन के अधीन बने 'डोमिनियन स्टेटस' में ही था। तब हमारा अपना संविधान नहीं था और कई महत्वपूर्ण निर्णय ब्रिटिश कानूनों के आधार पर लिए जाते थे। ऐसे में एक स्वतंत्र, लोकतांत्रिक और मजबूत भारत के निर्माण के लिए संविधान सभा ने संविधान बनाने का कार्य शुरू किया। लगभग तीन वर्षों की निरंतर मेहनत और 2 वर्ष 11 महीने 18 दिनों की चर्चा के बाद 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा ने संविधान को स्वीकार किया। लेकिन इसे लागू करने के लिए 26 जनवरी की तिथि चुनी गई क्योंकि सन् 1930 में इसी दिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 'पूर्ण स्वराज' की घोषणा की थी। यह दिन हमारे राष्ट्रीय संघर्ष और त्याग का प्रतीक था और इस दिन को महत्व देना चाहते थे।

भारत के संविधान के लागू होने के साथ ही हमारा देश एक लोकतांत्रिक गणराज्य बन गया जहाँ जनता सर्वोच्च मानी जाती है। संविधान ने हमें स्वतंत्रता, समानता, न्याय और बंधुता जैसे मूल अधिकार दिए। जो लोकतंत्र का मजबूत आधार है जिस पर आज का आधुनिक भारत खड़ा है। गणतंत्र दिवस हमें इन मूल्यों की याद दिलाता है और प्रेरित करता है कि हम संविधान की रक्षा करें और अपने कर्तव्यों का पालन करें।

गणतंत्र दिवस का मुख्य समारोह देश की राजधानी नई दिल्ली के कर्तव्य पथ (पूर्व राजपथ) पर आयोजित किया जाता है। इस भव्य समारोह के दौरान भारत के राष्ट्रपति तिरंगा ध्वज फहराते हैं और सामूहिक रूप से राष्ट्रीय गान गाया जाता है। इसके बाद भव्य परेड का आयोजन होता है जिसमें सेना, नौसेना और वायुसेना अपनी शक्ति, अनुशासन और देश की सुरक्षा के प्रति समर्पण का प्रदर्शन करती हैं। परेड में भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, विविधता और एकता को दर्शाने वाले झाँकियां प्रदर्शित की जाती हैं। यह समारोह न केवल देशवासियों को गर्व से भर देता है बल्कि पूरी दुनिया के सामने भारत की शक्ति, एकता और प्रगति का संदेश भी देता है।

देश के सभी विद्यालयों, कॉलेजों और सरकारी संस्थानों में भी यह पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। स्कूलों में छात्र परेड, सांस्कृतिक कार्यक्रम, देशभक्ति गीत और नृत्यों के माध्यम से गणतंत्र दिवस का महत्व समझते और समझाते हैं। वहीं हमारे वीर सैनिकों और स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित किया जाता है, जिन्होंने देश की रक्षा और आज़ादी के लिए अपना सब कुछ न्योछावर किया।

गणतंत्र दिवस केवल एक राष्ट्रीय उत्सव नहीं, बल्कि यह हमें अपने देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने की प्रेरणा देता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और संविधान निर्माताओं की दृष्टि से निर्मित इस राष्ट्र को मजबूत, सुरक्षित और समृद्ध बनाना हमारी जिम्मेदारी है। हमें चाहिए कि हम देश के प्रति अपने कर्तव्यों को निष्पक्षता और ईमानदारी के साथ निभाएँ और एक बेहतर भारत के निर्माण में योगदान दें।

अंत में, गणतंत्र दिवस भारत की गौरवपूर्ण लोकतांत्रिक परंपरा और हमारे संविधान के प्रति सम्मान का प्रतीक है। 26 जनवरी हमें यह संकल्प लेने का अवसर प्रदान करता है कि हम देश की एकता, विविधता और लोकतांत्रिक मूल्यों को सदैव बनाए रखेंगे और भारत को विकास की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँगे।

- कुमावत इंडिया पत्रिका टीम

जापान ने 1 लाख से ज़्यादा ऐसे लोग है जो 100 साल से अधिक उम्र के हैं

प्रत्येक वर्ष जापान में उन लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है जिन्होंने 100 वर्ष या उससे अधिक जी लिया है। वर्तमान में यह संख्या 100 हज़ार से भी ऊपर पहुँच चुकी है। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार, इस लंबी उम्र का मुख्य कारण खास जीन नहीं, बल्कि जीवनशैली, सामाजिक संबंध और मानसिक सक्रियता हैं। जापानियों के बीच कम फैट वाला पारंपरिक आहार, नियमित हल्की-फुल्की गतिशीलता, और मजबूत सामाजिक नेटवर्क उन्हें सिर्फ ज़्यादा दिनों तक नहीं बल्कि अच्छे स्वास्थ्य के साथ जिंदगी बिताने में मदद करते हैं। जनसंख्या में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 90% है जो यह दर्शाता है कि लंबी उम्र में लिंग संबंधी अंतर भी मौजूद हैं।

सौजन्य : Japan Ministry of Health data, September 2025.

नया साल: एक नई शुरुआत का जश्न

नया साल, जिसे हम नव वर्ष भी कहते हैं, दुनिया भर में सबसे उत्साह और उमंग के साथ मनाए जाने वाले अवसरों में से एक है। यह केवल कैलेंडर पर एक तारीख का बदलना नहीं है, बल्कि यह एक नई शुरुआत, नई उम्मीदों और नए संकल्पों का प्रतीक है।

बीते साल को अलविदा और नई आशाओं का स्वागत ?

जैसे ही दिसंबर का महीना समाप्त होता है, दुनिया भर के लोग एक साथ मिलकर गुज़र चुके साल को अलविदा कहने और आने वाले साल का स्वागत करने की तैयारी में जुट जाते हैं। 31 दिसंबर की रात को, जिसे **न्यू ईयर ईव** कहते हैं, लोग पार्टियों, संगीत, नाच-गान और शानदार आतिशबाजी के साथ जश्न मनाते हैं। आधी रात को ठीक 12 बजे, जब घड़ी की सुइयाँ मिलती हैं, तो हर तरफ **''हैप्पी न्यू ईयर''** की गूँज सुनाई देती है। यह पल दिखाता है कि कैसे एक ही भावना पूरी दुनिया को एक साथ जोड़ती है।

संकल्पों की शक्ति (New Year Resolutions)

नव वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है संकल्प लेना। हर कोई बीते साल की गलतियों से सीख कर, आने वाले साल को बेहतर बनाने का वादा करता है। ये संकल्प छोटे हो सकते हैं, जैसे कि रोजाना व्यायाम करना, किताबें पढ़ना, या कोई बुरी आदत छोड़ना, और बड़े भी हो सकते हैं, जैसे केरियर में सफलता पाना या कोई नया कौशल सीखना। संकल्प हमें अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने और जीवन को एक नई दिशा देने के लिए प्रेरित करते हैं।

नया साल, एक खाली कॉपी की तरह है। कलम आपके हाथ में है। यह आपके लिए 365 पन्नों की सबसे अच्छी कहानी लिखने का मौका है। आप इसे जरूर लिखे और वर्ष 2026 को खुशहाल बनाए।

भारत में नव वर्ष का उल्लास

भारत एक ऐसा देश है जहाँ 'एक जनवरी' के अलावा भी विभिन्न समुदायों और राज्यों में उनके अपने पारंपरिक नए साल मनाए जाते हैं (जैसे कि गुड़ी पड़वा, उगादी, बैसाखी, विशु, पोहेला बैशाख)। अनेक लोग चैत्र प्रतिपदा को 'भारतीय नव वर्ष' के रूप में मनाते हैं। हालाँकि, 1 जनवरी को देश के बड़े शहरों से लेकर छोटे कस्बों तक में एक समान उत्साह देखने को मिलता है। लोग मंदिर जाते हैं, प्रार्थना करते हैं, दोस्तों और रिश्तेदारों को ग्रीटिंग कार्ड और उपहार भेजते हैं, और एक-दूसरे को गले मिलकर नए साल की शुभकामनाएँ देते हैं।

समय का महत्व और आगे बढ़ने की प्रेरणा

नया साल हमें समय के चक्र और जीवन में निरंतरता (continuity) के महत्व का एहसास कराता है। यह याद दिलाता है कि समय कभी नहीं रुकता, और हमें भी हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए। हर नया साल हमें अपनी जिंदगी में खुशी, स्वास्थ्य और समृद्धि लाने का एक और अवसर देता है।

निष्कर्ष

नया साल आशा और उत्सव का समय है। यह अतीत को पीछे छोड़ने और भविष्य को अपनी इच्छाओं के अनुसार आकार देने का मौका है। तो आइए, हम सब मिलकर इस नए साल का खुले दिल से स्वागत करें और यह सुनिश्चित करें कि हम अपने संकल्पों को पूरा करने और अपने जीवन को अर्थपूर्ण बनाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे।

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ!

-अमिता कुमावत

रसोई से

स्वादिष्ट व्यंजन : फिरनी

फिरनी (Phirni) एक पारंपरिक और मलाईदार भारतीय मिठाई है जो दूध को पिसे हुए चावल या चावल के आटे के साथ धीमी आंच पर पकाकर बनाई जाती है, जिसे इलायची, केसर और मेवों से सुगंधित किया जाता है और ठंडा करके मिट्टी के बर्तनों (शिकोरों) में परोसा जाता है, जो एक लोकप्रिय, शाही व्यंजन है जो अक्सर त्योहारों पर बनता है। यह खीर से अलग है क्योंकि इसमें साबुत चावल के बजाय पिसे हुए चावल का पेस्ट इस्तेमाल होता है।

मुख्य सामग्री: चावल: कच्चे चावल को भिगोकर बारीक पीस लिया जाता है, जिससे एक पेस्ट बनता है। **दूध:** फुल-क्रीम दूध का उपयोग किया जाता है, जिसे गाढ़ा होने तक पकाया जाता है। **चीनी:** मिठास के लिए। **इलायची:** खुशबू के लिए। **केसर और मेवे (बादाम, पिस्ता):** सजावट और स्वाद के लिए।

बनाने की विधि (संक्षेप में): चावल को भिगोकर बारीक पीस लें। दूध और चावल के पेस्ट को एक साथ धीमी आंच पर गाढ़ा होने तक पकाएं, लगातार चलाते रहें। चीनी, इलायची पाउडर और केसर मिलाएं। इसे मिट्टी के बर्तनों (शिकोरों) में डालें और ठंडा करके परोसें, ऊपर से मेवों एवं गुलाब की पंखुड़ियों से सजाएं।

विशेषता : यह खीर की तरह ही होती है, लेकिन पिसे हुए चावल के कारण इसकी बनावट ज़्यादा चिकनी और मलाईदार होती है। इसे हमेशा ठंडा परोसा जाता है, खासकर गर्मियों में। मुगल काल से चली आ रही यह एक शाही मिठाई है और ईद, दिवाली जैसे त्योहारों पर खूब बनाई जाती है।

जयपुर की पतंगबाज़ी : राजमहलों से आमजन तक आकाश में उत्सव और संवेदनशीलता का संदेश : पतंग कटे, जिन्दगी नहीं

मकर संक्रान्ति आते ही जयपुर का आकाश केवल रंग-बिरंगी पतंगों से ही नहीं भरता, बल्कि उसके साथ जीवंत हो उठती हैं सदियों पुरानी परंपराएँ, शाही स्मृतियाँ और लोक-आस्था। यह वह दिन होता है जब गुलाबी नगर की छतें, महल, हवेलियाँ और गलियाँ सब एक साझा उत्सव-स्थल बन जाते हैं। 'वो काटा!' की गूंज, ढोल-नगाड़ों की थाप और लोकगीतों की स्वर-लहरियाँ जयपुर को एक जीवंत सांस्कृतिक रंगमंच में बदल देती हैं।

राजमहलों से शुरू हुई पतंगबाज़ी की परंपरा : जयपुर की पतंगबाज़ी का इतिहास कछवाहा राजवंश के काल से जुड़ा माना जाता है। कहा जाता है कि महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय, जिन्होंने जयपुर शहर की स्थापना की, खगोल विज्ञान के साथ-साथ लोक परंपराओं के भी बड़े संरक्षक थे। मकर संक्रान्ति का पर्व, जो सूर्य के उत्तरायण होने का प्रतीक है, उनके लिए विशेष महत्व रखता था। इसी कारण इस दिन राजमहलों की छतों पर विशेष पतंगबाज़ी का आयोजन किया जाता था। लोक कथाओं के अनुसार, सिटी पैलेस, जंतर-मंतर और आसपास की ऊँची अट्टालिकाओं से महाराजा स्वयं रंगीन पतंगें उड़ाते थे। दरबारियों, सेनानायकों और राजकुमारों के बीच पतंग काटने की शाही प्रतियोगिताएँ होती थीं। विजेताओं को सोने-चाँदी के सिक्के, वस्त्र और मान-सम्मान दिया जाता था। उस समय पतंगबाज़ी केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि धैर्य, रणनीति और कौशल का प्रतीक मानी जाती थी।

हवामहल और राजपरिवार की स्त्रियाँ : हवामहल की जालियों से झांकती राजपरिवार की स्त्रियाँ भी इस उत्सव का हिस्सा बनती थीं। कहा जाता है कि वे रंग-बिरंगी पतंगों के माध्यम से आकाश में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती थीं। किसी पतंग का विशेष रंग या डिज़ाइन राजमहल की ओर से शुभ संकेत माना जाता था। यह परंपरा बाद में आम जन में भी लोकप्रिय हो गई, जहाँ परिवारों की महिलाएँ छतों से पतंग उड़ाने लगीं।

शाही उत्सव से जन-उत्सव तक : समय के साथ यह शाही परंपरा महलों की दीवारों से बाहर निकलकर आम लोगों तक पहुँची। व्यापारियों, कारीगरों और सैनिकों ने इस उत्सव को अपनाया और अपनी-अपनी छतों को पतंगों से सजा दिया। पुरानी जयपुर की गलियों—चौड़ा रास्ता, त्रिपोलिया बाज़ार, किशनपोल में मकर संक्रान्ति पर विशेष चहल-पहल रहने लगी। पतंग और मांझे की दुकानों पर भीड़ उमड़ पड़ती थी, और कारीगर महीनों पहले से पतंगें तैयार करने लगते थे।

नाहरगढ़ से दिखता रंगीन आकाश : कहा जाता है कि नाहरगढ़ के किले से जयपुर का आकाश मकर संक्रान्ति के दिन सबसे अधिक रंगीन दिखाई देता था। वहाँ से महाराजा और उनके अतिथि पूरे शहर की पतंगबाज़ी का आनंद लेते थे। सूर्यास्त के समय जब सुनहरी धूप पतंगों से टकराती थी, तो वह दृश्य किसी उत्सव चित्रकला से कम नहीं लगता था।

सामाजिक समरसता का प्रतीक : आज भी जयपुर की पतंगबाज़ी उसी शाही परंपरा की जीवंत झलक है। फर्क बस इतना है कि अब इसमें राजा और प्रजा का भेद नहीं रहा। हर छत एक महल बन जाती है और हर व्यक्ति इस उत्सव का राजा। बच्चे, युवा, बुज़ुर्ग—सब मिलकर पतंग उड़ाते हैं, मिठाइयाँ बाँटते हैं और एक-दूसरे की जीत पर तालियाँ बजाते हैं।

पतंग कटे, जिंदगी नहीं : लेकिन इस उल्लास के बीच एक **जिम्मेदारी भी** हमारा इंतज़ार करती है। पतंगबाज़ी का असली आनंद तभी है जब वह सुरक्षित और संवेदनशील हो। **''पतंग कटे, जिंदगी नहीं''**—यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक मानवीय संकल्प है। नायलॉन या चीनी मांझे से हर साल कितनी ही अनमोल जिन्दगियाँ कट जाती हैं—कभी किसी राहगीर की गर्दन, कभी किसी बच्चे के हाथ और कभी किसी मासूम परिंदे के पंख। जीत की एक क्षणिक खुशी किसी की जिंदगी से बड़ी नहीं हो सकती।

बेजुबान परिंदों की पीड़ा भी समझें : आकाश केवल हमारी पतंगों के लिए नहीं है, वह बेजुबान परिंदों का घर भी है। हर साल मकर संक्रान्ति के दिनों में असंख्य पक्षी घायल होते हैं, उनके पंख कट जाते हैं, उनकी उड़ान हमेशा के लिए छिन जाती है। वे बोल नहीं सकते, शिकायत नहीं कर सकते- बस तड़पते हैं। पतंग उड़ाइए, अवश्य उड़ाइए, लेकिन इस बात का भी ध्यान रखिए कि हमारी खुशी किसी मासूम की पीड़ा का कारण न बने। परिंदों को भी उड़ने की आज़ादी दीजिए—आकाश पर उनका भी उतना ही अधिकार है जितना हमारा।

संवेदनशील उत्सव की ओर एक कदम : यदि हम सूती और पर्यावरण-अनुकूल मांझे का उपयोग करें, घायल पक्षियों के लिए छतों व आस-पास पानी-दाना रखें, और बच्चों को

सुरक्षित व जिम्मेदार पतंगबाज़ी के संस्कार दें, तो यह पर्व केवल मनोरंजन नहीं बल्कि मानवता और करुणा का उत्सव बन सकता है। छतों पर खुशी के साथ-साथ संवेदना, जिम्मेदारी और सह-अस्तित्व का भाव भी उड़ना चाहिए। साथ ही यह भी हमारा सामूहिक दायित्व है कि सुबह और शाम, जब पक्षियों के आने-जाने का समय होता है, तब पतंगबाज़ी से परहेज़ करें, क्योंकि यही समय उनके लिए सबसे अधिक जोखिम भरा होता है। यदि कहीं कोई पक्षी घायल अवस्था में दिखाई दे, तो उसे अनदेखा न करें-तुरंत उसकी सहायता करें। नज़दीकी पशु चिकित्सक, पक्षी-सेवा संस्था या स्वयंसेवी संगठन से संपर्क करें, प्राथमिक उपचार दें और उसके जीवन को बचाने का प्रयास करें। यह छोटा-सा प्रयास किसी निरीह प्राणी के लिए जीवनदान बन सकता है। जब हमारी पतंगें आकाश में उड़ें, तो उनके साथ-साथ हमारी संवेदनशीलता, करुणा और मानवता भी ऊँचाइयों को छुए। तभी यह पर्व सच्चे अर्थों में समाज को जोड़ने वाला और जीवन का सम्मान करने वाला पर्व कहलाएगा।

जयपुर की पतंगबाज़ी इतिहास, परंपरा और सामूहिक उल्लास का अद्भुत संगम है। राजमहलों से शुरू होकर आमजन की छतों तक पहुँचा यह उत्सव आज भी उतना ही जीवंत और गौरवशाली है। हम यह कतई नहीं चाहते कि पतंगबाज़ी पर विराम लगे- पतंग अवश्य उड़ाएँ, क्योंकि यह हमारा त्योहार है, हमारी परंपरा और हमारी संस्कृति की पहचान है। लेकिन अब समय आ गया है कि इस परंपरा में संवेदनशीलता का रंग भी घुल जाए। इस मकर संक्रान्ति पर संकल्प लें- **'पतंग कटे, जिन्दगी नहीं।'** आसमान केवल हमारा नहीं है; उन बेजुबान परिंदों का भी है, जिनका भी परिवार है, बच्चे हैं, सपने हैं। हमारी एक छोटी-सी सावधानी उनके पूरे जीवन की रक्षा कर सकती है। पतंग उड़ाएँ, उल्लास मनाएँ, पर इस तरह कि पक्षियों को भी उड़ने की पूरी आज़ादी मिले- क्योंकि उत्सव वही है, जो सबके लिए सुरक्षित और करुणामय हो।

-निकिता वर्मा, दमन

त्रुटि सुधार : नवम्बर 2025 के अंक में पेज 19 पर प्रकाशित लेख विरसा मुंडा में जन्म 15 नवम्बर 1975 टंकण की त्रुटि से छप गया था, इसे 15 नवम्बर 1875 पढ़ा जाए।

प्रोफेसर बबीता कुमावत का रामस्नेही संप्रदाय पर हुआ शोध पत्र प्रकाशित

भोपालगढ़। क्षेत्र के बारनी खुर्द गांव निवासी बबीता कुमावत सहायक आचार्य का रामस्नेही संप्रदाय पर एक शोध पत्र प्रकाशित हुआ है। प्रोफेसर बबीता कुमावत का रामस्नेही संप्रदाय के सिद्धांतों व नियमों पर आधारित शोध पत्र कानपुर से प्रकाशित शोध पत्रिका शोध संगम में प्रकाशित हुआ तथा शोध संगम पत्रिका की ऑनलाइन वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।

प्रोफेसर बबीता कुमावत ने इस शोध पत्र के संदर्भ में रामस्नेही संप्रदाय के संतों के बारे में विस्तार से बताया है कि रामस्नेही संप्रदाय के संतगण स्नान, माला, जप, उपवास आदि के माध्यम से ब्रह्म को प्राप्त नहीं कर पाने के पक्षधर हैं। अगर ब्रह्म को प्राप्त करना है तो रामनाम के प्रति सच्ची श्रद्धा व आस्था रखनी चाहिए। शोध संगम पत्रिका ने प्रो. कुमावत को उनके शोध पत्र प्रकाशन पर प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया है। बहुत-बहुत बधाई।

उद्योगिनी योजना मिल रहा रु. 3 लाख तक लोन

गरीब महिलाएं भी शुरू कर सकती हैं अपना कारोबार

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने उद्योगिनी योजना 2025 को और सशक्त बनाया है। इस योजना के तहत गरीब महिलाओं को बिना किसी गारंटी (कोलैटरल) के 3 लाख रुपए तक का लोन मिल सकता हे तथा वे 30% तक सब्सिडी भी प्राप्त होगी। अगर कोई महिला 3 लाख रुपए का लोन लेती है, तो उसे इस राशि पर सरकार की ओर से महत्वपूर्ण वित्तीय राहत भी मिलेगी। यह योजना आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं के लिए है और जिनके पास बैंक गारंटी देने की सुविधा नहीं है। महिलाएं इस योजना से अपने छोटे व्यवसाय जैसे ब्यूटी पार्लर, सिलाई-कढ़ाई, किराने की दुकान, डेयरी या अन्य छोटे उद्योग आसानी से शुरू कर सकती हैं।

योजना के पात्र:

- महिला की उम्र 18 से 55 वर्ष के बीच तथा पिछले ऋण को अदा करने में डिफॉल्ट नहीं किया हो।
- परिवार की वार्षिक सालाना आय 1.50 लाख से कम हो। दिव्यांगो/विधवाओं के लिए आय की सीमा नहीं है।
- प्राथमिकता ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों की महिलाएं।

जगदीशचंद्र कुमावत (मामोडिया) को ऑल इंडिया मेडिकल लेबोरेट्री टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन, राजस्थान प्रदेश का अध्यक्ष चुना गया। **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से बधाई।

बसंत पंचमी: ज्ञान और प्रकृति के नवसंचार का पर्व

बसंत पंचमी, जिसे **श्री पंचमी** या **सरस्वती पूजा** के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय संस्कृति के सबसे रंगारंग और महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह पर्व माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है, जो आमतौर पर अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार जनवरी या फरवरी के अंत में आता है। यह केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह बसंत ऋतु के आगमन और प्रकृति में नवजीवन के संचार का प्रतीक है।

प्रकृति की अनुपम छटा : बसंत पंचमी के आते ही प्रकृति एक नया रूप धारण कर लेती है। कड़ाके की सर्दी धीरे-धीरे विदा होने लगती है और मौसम सुहाना हो जाता है। पेड़ों पर नई कोपलें फूटने लगती हैं, और चारों ओर हरियाली छा जाती है। इस समय खेतों में सरसों के पीले-पीले फूल ऐसे खिल उठते हैं, मानो धरती ने पीले रंग की चादर ओढ़ ली हो। आम के पेड़ों पर बौर (फूल) आने लगते हैं और हवा में फूलों की भीनी-भीनी खुशबू घुल जाती है। बसंत ऋतु को 'ऋतुराज' अर्थात् ऋतुओं का राजा कहा जाता है, और बसंत पंचमी इसी राजा के स्वागत का द्वार खोलती है। भगवद्गीता में कृष्ण ने कहा कि ऋतुओं में मैं बसंत ऋतु हूं। इससे इसका महत्व प्रकट होता है।

ज्ञान की देवी सरस्वती का पूजन : बसंत पंचमी का सबसे महत्वपूर्ण पहलू ज्ञान, संगीत और कला की देवी माँ सरस्वती की पूजा है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, इसी दिन माँ सरस्वती का प्राकट्य हुआ था, जिन्होंने अपनी वीणा की मधुर ध्वनि से संसार को वाणी और चेतना प्रदान की थी। इसलिए, यह दिन विद्यार्थियों, कलाकारों और ज्ञान साधकों के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है।

विद्यालयों, कॉलेजों और शिक्षण संस्थानों में विशेष रूप से माँ सरस्वती की प्रतिमा स्थापित कर उनकी पूजा-अर्चना की जाती है। छात्र और शिक्षक पीले वस्त्र धारण कर माँ को पीले फूल, फल और मिठाई अर्पित करते हैं। इस दिन बच्चे अपनी किताबों, कलम, वाद्य यंत्रों और अन्य कला सामग्री की पूजा करते हैं, और विद्या तथा बुद्धि में वृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। कई स्थानों पर बच्चों का 'अक्षरारंभ' (शिक्षा की शुरुआत) भी इसी दिन किया जाता है, क्योंकि यह दिन नई शुरुआत के लिए बहुत शुभ माना जाता है।

उत्सव और परंपराएँ : इस त्योहार में पीले रंग का विशेष महत्व होता है। पीला रंग ऊर्जा, ज्ञान, समृद्धि और बसंत की फसल (सरसों) का प्रतीक है। इसलिए, लोग इस दिन पीले रंग के कपड़े पहनते हैं और घरों में पीले पकवान, जैसे केसरी खीर, पीले चावल और बेसन के लड्डू बनाए जाते हैं।

देश के कई हिस्सों में इस दिन पतंग उड़ाने की परंपरा भी है, जो उत्सव और उल्लास को दर्शाती है। पंजाब, हरियाणा और दिल्ली जैसे राज्यों में पतंगबाजी का विशेष आयोजन होता है। इसके अलावा, देश के विभिन्न क्षेत्रों में बसंत पंचमी को अलग-अलग सांस्कृतिक रूपों में मनाया जाता है, जैसे पश्चिम बंगाल में यह 'सरस्वती पूजा' के रूप में बहुत धूमधाम से मनाई जाती है।

नई शुरुआत का संदेश : बसंत पंचमी केवल पूजा और उत्सव का दिन नहीं है, बल्कि यह हमें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। जिस प्रकार पतझड़ के बाद पेड़ नए पत्ते धारण करते हैं, उसी तरह यह त्योहार हमें पुरानी नकारात्मकताओं को त्यागकर जीवन में नई ऊर्जा और उत्साह के साथ ज्ञान की ओर बढ़ने का संदेश देता है। यह हमें प्रकृति से जुड़ने और ऋतु परिवर्तन का आनंद लेने का मौका भी देता है। यह पर्व भारतीय संस्कृति की सुंदरता और जीवन के प्रति हमारे गहरे सम्मान को प्रकट करता है।

निष्कर्ष : बसंत पंचमी का त्योहार भारतीय संस्कृति के ज्ञान, कला और प्रकृति प्रेम के सुंदर समन्वय को दर्शाता है। यह हमें यह याद दिलाता है कि जीवन में ज्ञान का महत्व सर्वोपरि है और हमें सदैव नई चीजें सीखते रहना चाहिए। यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह शीत की जड़ता को तोड़कर, जीवन में नए उत्साह और ऊर्जा के संचार का एक आह्वान है।

यह पावन पर्व हमें आशा, सौंदर्य और ज्ञान की शक्ति से जीवन को प्रकाशित करने की प्रेरणा देता है।

सिडनी में आतंकी हमला, 15 मरे

सिडनी के बॉडी बीच पर हनुक्का त्यौहार मनाने एकत्र हुए एक हजार से अधिक यहुदियों पर 2 आतंकियों ने अंधाधुंध गोलीबारी कर दी, जिसमें 15 लोग मारे गए तथा लगभग 29 घायल हो गये, इनमें 1 बच्चा एवं 2 पुलिस अधिकारी भी है। एक हमलावर पुलिस द्वारा मार दिया गया जबकि दूसरा हमलावर नवीद अकरम (24 वर्षीय) पकड़ा गया। अहमद अल अहमद नामक व्यक्ति ने जान की परवाह किये बिना आतंकी से राइफल छीनकर अनेक लोगों को बचाया। प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने अस्पताल जाकर उनसे मुलाकात की।आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने कहा कि वे इस घटना से दुखी हैं तथा इसे यहूदी विरोधी आतंकी कृत्य है। हम हिंसा और नफरत के इस घिनोने कृत्य को खत्म करेंगे। दुनिया भर के नेताओं ने इस घटना की निंदा की है।

गोवा में पी.एम. मोदी ने 77 फीट ऊंची भगवान राम की प्रतिमा का किया अनावरण

गोवा में श्री संस्थान गोकर्ण जीवोत्थम मठ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भगवान राम की दुनिया की सबसे ऊंची 77 फीट की कांस्य मूर्ति का अनावरण किया। जहां इस समय मठ परंपरा के 550 साल पूरे होने पर खास आयोजन हुए।

मठ परंपरा के 550 साल पूरे होने के अवसर पर 27 नवंबर से 7 दिसंबर तक कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। जानकारी के मुताबिक, हर दिन 7000 से 10 हजार श्रद्धालु मठ में आये। दक्षिण गोवा के कनाकोना स्थित पर्तगल गांव में इस मठ का वर्तमान परिसर करीब 370 साल पहले बनाया गया था।

मोदी ने उडुपी में एक लाख से ज्यादा लोगों के साथ भगवद्गीता के श्लोकों का पाठ किया। गोवा जाने से पहले पीएम मोदी ने कर्नाटक के उडुपी में रोड शो किया। यहां उन्होंने श्री कृष्ण मठ में '**लक्ष कंठ गीता पारायण**' कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने एक लाख से ज्यादा लोगों के साथ भगवद गीता के श्लोकों का पाठ किया। इसमें छात्र, संत, विद्वान और अलग-अलग क्षेत्रों के लोग शामिल हुए।

अयोध्या के राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण हुआ

25 नवंबर 2025 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत ने अयोध्या के राम मंदिर के शिखर पर भगवा ध्वज फहराकर 500 साल पुराने संकल्प को पूरा किया, जिसे उन्होंने 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय एकता' का प्रतीक बताया। यह ध्वजारोहण एक ऐतिहासिक क्षण था। जो मंदिर के पूर्ण निर्माण और रामराज्य के आदर्शों का प्रतीक है।

ऐतिहासिक पल: प्रधानमंत्री मोदी ने 25 नवंबर 2025 को राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण किया, जो करोड़ों भक्तों के विश्वास और 500 साल के इंतजार का फल था।

प्रतीकात्मकता: इस ध्वज को भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण, असत्य पर सत्य की विजय और 'रामराज्य' की भावना का प्रतीक बताया गया।

ध्वज का स्वरूप: यह 2 किग्रा वजनी, 22 फीट लंबा और 11 फीट चौड़ा भगवा ध्वज है, जिस पर 'ॐ', चमकता सूरज और कोविदार वृक्ष के चिन्ह बने हैं। 'ॐ' समन्वय, शांति और एकत्व का चिह्न है। कोविदार वृक्ष इक्ष्वाकु वंश का राज्य चिह्न और राम के वंश का अधिकारिक प्रतीक माना जाता है। ये सकारात्मक ऊर्जा और दिव्यता का संदेश देते हैं।

मोदी के विचार: पीएम मोदी ने कहा कि यह ध्वज करोड़ों राम भक्तों तक यह संदेश ले जाएगा कि मंदिर पूरी तरह तैयार है और यह विकसित भारत के नवजागरण का प्रतीक है।

धार्मिक महत्व: मंदिर पर ध्वज फहराना देवता की उपस्थिति और मंदिर के पूर्ण होने की घोषणा होती है, जिससे वह पूरा क्षेत्र पवित्र हो जाता है।

आगे के कार्यक्रम: राम मंदिर परिसर के अन्य मंदिरों में भी ध्वजारोहण की तैयारियां चल रही हैं, जो 31 दिसंबर तक चलेंगी, और इस दौरान कई धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे।

परिसर में रामायण पात्रों को समर्पित मंदिर तथा ऋषि और भक्तों के मंदिर निर्मित किए गए हैं जिनमें महर्षि वाल्मिकी, वशिष्ठ, विश्वामित्र, आगस्त्य, निशादराज, शबरी, अहिल्या और तुलसीदास के मंदिर तैयार हो चुके हैं। परिसर में जटायु और गिरहरी की प्रतिमा भी स्थापित हुई है जो उनके महत्व को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त 10 एकड़ में पंचवटी का निर्माण तथा साढ़े तीन किलोमीटर लम्बी चार दिवारी को तैयार करने का काम जारी है।

कुमावत समाज के लोग कांग्रेस के राजनीतिक पदों पर नियुक्त

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने ओबीसी विभाग में कुमावत समाज के राजनीतिक विभूतियों को अनेक पदों पर नियुक्ति दी है। ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी ओबीसी विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल जयहिन्द के निर्देशानुसार **श्रीमती भारती कुमावत** को प्रदेश महासचिव के पद पर नियुक्त कर समाज का गौरव बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त **अरुण कुमार कुमावत**, **अशोक चंद्र कुमावत** एवं **अमोलक कुमावत** को प्रदेश सचिव पद पर नियुक्त किया गया है। **नरेन्द्र मारवाल, गजानन्द कुमावत** और **अमरचन्द कुमावत** को प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया गया है। **नानू राम कुमावत** को जिला अध्यक्ष ग्रामीण पश्चिम का दायित्व दिया गया है।

श्रीमती भारती कुमावत नरेन्द्र मारवाल गजानंद कुमावत अमरचंद कुमावत नानूराम कुमावत

श्रीमती भारती कुमावत वर्तमान में कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति मालवीय नगर जयपुर की अध्यक्षा हैं तथा 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की सचिव भी हैं। श्री नरेन्द्र मारवाल जयपुर व्यापार मण्डल के प्रवक्ता एवं नन्दपुरी बाजार व्यापार मण्डल के अध्यक्ष हैं।

इन नियुक्तियों से यह प्रकट है कि कुमावत समाज शिक्षा, राजनीतिक जागरूकता, संगठनात्मक शक्ति और नेतृत्व के गुणों से भरपूर है। अन्य राजनैतिक दलों से भी अपेक्षा है कि वे कुमावत समाज के लोगों को नियुक्त कर उनकी प्रतिभा से लाभ उठाये।

नियुक्त पदाधिकारियों को 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

युवा नितिन नवीन को भाजपा की कमान

- **मोदी 3.0 में शुरू हुआ जेनरेशन नेक्स्ट काल**
- **निर्णय ने चौंकाया सब को**

5 बार के विधायक और बिहार के 3 बार मंत्री रहे पथ निर्माण मंत्री 45 वर्षीय नितिन नवीन को भारतीय जनता पार्टी का कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त कर सभी को चौंका दिया है। ये नये अध्यक्ष के चुनाव तक यह महत्वपूर्ण पद सम्भालेंगे। इन्होंने एक कर्मठ एवं परिश्रमी नेता की छवि बनाई तथा एक समर्पित कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते हुए छत्तीसगढ़ एवं बिहार में पार्टी को जीत दिलाई है। इनके नियुक्ति से पार्टी में जेनरेशन नेक्स्ट का काल शुरू हो गया है, जो युवा नेतृत्व की भागीदारी बढ़ाने का संकेत है। पार्टी इन्हीं के नेतृत्व में पं. बंगाल चुनाव लड़ने जा रही है।

श्री नितिन नवीन को **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री दिलीप चौधरी (कुमावत) सांवेर वालों को भाजपा के इंदौर जिला ग्रामीण उपाध्यक्ष पद पर नियुक्ति होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाए।

सीताराम कुमावत को केकड़ी बार एसोसिएशन के अध्यक्ष पद पर विजयी होने पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

7 दिसम्बर को थानागाजी (अलवर) में समाज के प्रतिभा एवं भामाशाह सम्मान समारोह में केबीनेट मन्त्री श्री जोराराम कुमावत, राज्यमंत्री श्री प्रहलाद रॉय टाक (अध्यक्ष माटी कला बोर्ड राज. सरकार), श्री कांतीलाल मीना स्थानीय विधायक थानागाजी, विराट ग्रुप, सुनील कुमावत जी आदि उपस्थित रहे।

डॉ. भावेश कुमावत को रिसर्च फ़ाउंडेशन ऑफ़ इंडिया का सदस्य मनोनीत किया गया

आबूरोड रिसर्च फाउंडेशन ऑफ़ इण्डिया तथा आर.एफ.आई. केयर द्वारा माधव विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. भावेश कुमावत को सलाहकार मण्डल सदस्य एवं राजस्थान राज्य परिषद सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया है। संस्था ने 10 दिसंबर 2025 को आधिकारिक सदस्यता पुष्टि-पत्र जारी कर उनके चयन की जानकारी प्रदान की। जारी पत्र में कहा गया है कि डॉ. कुमावत को यह महत्वपूर्ण दायित्व शिक्षा, अनुसंधान और विश्वविद्यालय प्रशासन के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदानों को देखते हुए प्रदान किया गया है। उनकी सदस्यता अवधि में वे संस्था की शैक्षणिक एवं अनुसंधान-सम्बन्धी गतिविधियों में मार्गदर्शन प्रदान करते हुए संगतन उद्देश्यों को सुदृढ़ बनाएंगे। बधाई।

विधिक सलाहकार कुमावत ने कार्यभार संभाला

पीसांगन सिटी। नवसृजित नगर पालिका में ईओ हेमेंद्र सिंह की मौजूदगी में विधिक सलाहकार **विजय प्रकाश कुमावत** द्वारा कार्यभार ग्रहण किया। एडवोकेट विजय प्रकाश कुमावत द्वारा विधिक सलाहकार पद पर कार्यभार ग्रहण करने पर एडवोकेट समाज सहित कुमावत समाजबंधुओं ने भी खुशी जाहिर की एवं उन्हें बधाई दी।

श्रीमती भारती वर्मा (कुमावत)

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस ओबीसी महासचिव नियुक्त होने पर

हार्दिक बधाई!

'कुमावत इंडिया' पत्रिका
कुमावत प्रगति ट्रस्ट

राजेश कुमावत

(दम्बीवाल) जयपुर को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी उद्योग व्यापार प्रकोष्ठ का प्रदेश सचिव बनाए जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

बास्केटबाल में दृष्टि का चयन राजस्थान टीम में

गुढ़ा गोरजी (झुंझुनूं) निवासी प्रतिभाशाली खिलाड़ी दृष्टि सुपुत्री श्री देवेश वर्मा का चयन राजस्थान बास्केटबॉल टीम में हुआ है। वे आगामी नेशनल टूर्नामेंट, शहडोल, मध्य प्रदेश में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करेंगी। इससे पूर्व दृष्टि जिला व राज्य स्तर पर चैंपियन रह चुकी हैं।

खास बात यह है कि उनकी बडी बहन **दिव्यांशी** ने भी पिछले वर्ष बास्केटबॉल में जिला व राज्य स्तर पर उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल करते हुए CBSE क्लस्टर टूर्नामेंट मे राष्ट्रीय स्तर (National Level) पर राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया है।

कम उम्र में दोनों बहनों का इस स्तर तक पहुँचना उनकी मेहनत, अनुशासन और पारिवारिक सहयोग का परिणाम है। **दिव्यांशी एवं दृष्टि** की सफलता कुमावत समाज सहित क्षेत्र की बेटियों के लिए प्रेरणास्रोत है। बधाई एवं शुभकामनाए।

बीएलओ कुमावत को एस आई आर का कार्य पूर्ण करने पर जिला कलेक्टर से सम्मानित

दांता रामगढ़। सीकर जिले के विधानसभा सभा क्षेत्र दांतारामगढ़ के भाग संख्या 193 (महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय दांता नं.1) के BLO **जगदीश प्रसाद कुमावत** सहायक बीएलओ **मुन्नी कुमावत** के द्वारा SIR कार्य के तहत 1400+ मतदाताओं का शत प्रतिशत कार्य 24.11.2025 को पूरा कर सराहनीय कार्य किया है, जिसके लिए जिला स्तर पर जिला कलेक्टर मुकुल शर्मा ओर मुख्य चुनाव आयुक्त एम एम तिवाड़ी के कर कमलों से शत प्रतिशत SIR पूर्ण करने पर जिला स्तर पर सम्मानित किया गया।

BLO **पन्नाराम जी कुमावत** बांद्रा कवास को SIR कार्य पूर्ण करने पर जिला कलेक्टर टीना डाबी द्वारा सम्मानित किया गया बहुत बहुत बधाई एवं उज्ज्वल। भविष्य की कामना।

भक्ति, करुणा और सेवा की मिसाल : स्वामिनी सेवा संस्था के 9 वर्ष पूर्ण

जयपुर। स्वामिनी सेवा संस्था ने निस्वार्थ सेवा और मानवता के संदेश को समर्पित अपने प्रेरणादायी सफर के नौ वर्ष पूर्ण कर दसवें वर्ष में प्रवेश कर लिया। संस्था का स्थापना दिवस श्रद्धा, करुणा और सेवा भावना के साथ आयोजित किया गया।

स्थापना दिवस के अवसर पर संस्था द्वारा दादू दयाल गौशाला, निवाई में गौ माता को कुट्टी व खाखला अर्पित किया गया, वहीं गलता तीर्थ में बंदरों को फल खिलाकर जीव सेवा का पुण्य कार्य संपन्न हुआ। इस दौरान कबूतरों के लिए मूंग व बाजरा भी डलवाया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य स्पष्ट रहा- प्रत्येक जीव में ईश्वर का दर्शन कर सेवा करना ही सच्ची भक्ति है।

संस्था के अध्यक्ष अशोक कुमावत, कोषाध्यक्ष गुरुदयाल कुमावत, मंत्री गोविंद कुमावत एवं सहायक मंत्री महेंद्र कुमावत ने बताया कि बीते नौ वर्षों से संस्था सेवा कार्यों को ही अपनी पूजा मानते हुए निरंतर आगे बढ़ रही है। उल्लेखनीय है कि संस्था द्वारा प्रत्येक अमावस्या को एसएमएस अस्पताल में मरीजों एवं उनके परिजनों को भोजन वितरण का सेवा कार्य नियमित रूप से किया जाता है। लंबी बीमारी, आर्थिक कठिनाइयों और अस्पताल के तनावपूर्ण वातावरण में यह भोजन केवल पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि मानवता, सहयोग, हौसला और संवेदना का जीवंत प्रतीक बनता है। संस्था के सदस्यों का मानना है कि समाज और जीवों की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है, और यही भावना उन्हें निरंतर सेवा के पथ पर अग्रसर रखती है।

दीपावली बनी विश्व विरासत

यूनेस्कों के 20वें सत्र की 8-13 दिसम्बर को दिल्ली के लाल किले में बैठक हुई जिसमें भारत सरकार के प्रस्ताव पर दीपावली पर्व को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में रखने का निर्णय लिया गया। यह पल हमारे लिए गौरव एवं ऐतिहासिक था।

दीपावली पर्व, हिन्दू धर्म की 5000 वर्ष पुरानी परम्परा का प्रतीक है जब श्री राम 14 वर्ष का वनवास पूर्ण कर **''मर्यादा पुरुषोत्तम राम''** बनकर लौटे थे। तब अयोध्यावासियों ने उनका स्वागत दीप प्रज्ज्वलित कर किया था। तब से इस दिन दीपावली मनाते हैं। यह पर्व स्वच्छता और रोशनी का पर्व है। भारत की गौरवशाली संस्कृति और आत्मा से जुड़ा पर्व दीपावली को विश्वविरासत में स्थान मिलना भारत के लिए हर्ष का विषय है।

अब तक भारत की 16 सांस्कृतिक विरासत इस सूची में शामिल की गई है। वैदिक मंत्र पठन, कुटियट्टम, रामलीला, रम्मन, कुम्भ मेला, दुर्गा पूजा, नवरोज, योग, गरबा नृत्य, कालबेलिया गीत व नृत्य, छाऊ नृत्य, मुडियेट्टू नृत्य, मणिपुर का संकीर्तन, लद्दाक का बौद्ध पाठ, जाडियाला गुरु का ठठेरा बर्तन निर्माण और अब दीपावली। भारत सरकार ने छठ महापर्व को भी इस सूची में शामिल करने का प्रस्ताव किया है।

डॉ. दुर्गा कुमावत को Ph.D. की उपाधि

संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में शोधकार्य के लिए दुर्गा कुमावत विद्या वाचस्पति को Ph.D. की उपाधि मिली है। यह इनकी गहन विद्वत्ता, अनुशासित अध्ययनशीलता तथा उत्कृष्ट अनुसंधान दृष्टि का सशक्त प्रमाण है। संस्कृत की अनंत ज्ञानी, विदुषी एवं भारतीय संस्कृति के संरक्षण तथा उसके व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर समर्पित योगदान देने वाली एक प्रतिष्ठित शैक्षणिक व्यक्तित्व हैं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से डॉ. दुर्गा कुमावत को बहुत-बहुत बधाई।

नेहा कुमावत को Ph.D. की डिग्री

श्रीमती नेहा कुमावत पुत्री श्री उदय लाल मालीवाल निवासी पूला को अकाउंट्स में Ph.D. करने पर मानवीय राज्यपाल महोदय द्वारा सम्मानित किया गया।

नेहा कुमावत को Ph.D. की डिग्री मिलने पर **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से बहुत-बहुत बधाई।

सर्दियों में शहद का सेवन सेहत के लिए वरदान

सर्दियाँ आते ही आयुर्वेद 'शहद' के सेवन की सलाह देता है, जिसे प्राकृतिक रसायन, शरीर का हीटर और इम्युनिटी बूस्टर अमृत कहा गया है। आज की वैज्ञानिक शोध भी इस बात की पुष्टि करती हैं कि ठंड में शहद शरीर को ऊर्जा, गर्माहट और रोग प्रतिरोधक शक्ति का सबसे प्राकृतिक स्रोत प्रदान करता है।

प्रस्तुत है शहद का असली विज्ञान एवं आयुर्वेदिक रहस्य और इसे खाने के वे तरीके जिनसे इसके गुण दुगुने हो जाते हैं-

1) सर्दियों में शहद क्यों है जरूरी — वैज्ञानिक तथा आयुर्वेदिक कारण शरीर का तापमान संतुलित करता है। शहद में मौजूद 'थर्मोजेनिक प्रॉपर्टीज़' शरीर में ऊर्ज बढ़ाती हैं, जिससे ठंड कम लगती है।

अन्य कारण-

■ **इम्युनिटी को फौरन मजबूत करता है-** इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट फ्लेवोनॉयड एंज़ाइम वायरस और बैक्टीरिया से लड़कर शरीर को सर्दियों की बीमारियों से बचाते हैं।

■ **कफ-बलगम कम करता है-** आयुर्वेद के अनुसार शहद कफ-शामक है, इसलिए जुकाम, खाँसी और कफ में यह बहुत लाभ देता है।

■ **थकान तुरंत दूर करता है-** शहद का नैचुरल ग्लूकोज़ शरीर को फौरन ऊर्जा देता है बिना शुगर जैसे नुकसान के।

2) शहद में कौन-कौन से पोषक तत्व इसे सुपरफूड बनाते हैं ?

शहद में लगभग 200 से अधिक Bioactive compounds पाए जाते हैं। जिनमें सबसे शक्तिशाली हैं: Quercetin जो सूजन कम करता है। Apigenin जो इम्युनिटी बढ़ाता है। Pinocembrin जो दिमाग के लिए टॉनिक है। Natural enzymes जो पाचन तेज करते हैं। Amino acids जो बॉडी रिपेयर में मदद करता है।

इन सक्रिय तत्वों की वजह से शहद शरीर पर मल्टी-लेवल पर काम करता है।

3) शहद खाने का सही समय - कब फायदा दुगुना होता है ?

(1) सुबह खाली पेट गुनगुना पानी के साथ लेने पर-

■ शरीर को Detox करता है।
■ कब्ज में राहत होती है।
■ Energy boost होती है।
■ Weight management होता है।

(2) रात को सोने से 1 घंटे पहले लेने पर

■ अच्छी नींद आती है।
■ पाचर में सुधार होता है।
■ रात्री को कफ में राहत मिलती है।

(3) वर्कआउट से 20 मिनट पहले। यह करने पर स्टेमिना बढ़ाता है, Fatigue कम करता है तथा Muscle recovery तेज करता है।

(4) पानी में मिलाकर शहद लें क्योंकि गरम चाय/दूध में शहद मिलाने से उसके एंज़ाइम नष्ट हो जाते हैं।

4) शहद खाने के वो तरीके जिनसे फायदे दुगुने हो जाते हैं:

1. शहद एवं दालचीनी-यह सर्दियों का अमृत है। इससे कोलेस्ट्रॉल कम, ब्लड शुगर नियंत्रित तथा इम्युनिटी दोगुनी हो जाती है।

2. शहद एवं अदरक का रस-यह गले का दर्द, खाँसी तथा वायरल में बेहद प्रभावी है।

3. शहद एवं हल्का गुनगुना पानी-इससे Morning detox, पाचन तेज तथा त्वचा साफ होती है।

4. शहद एवं नींबू। इससे मोटापा घटता है, मेटाबोलिज्म बढ़ता है तथा लीवर साफ होता है।

5. शहद एवं तुलसी के पत्ते- इससे कफ कम होता है, सीने की ठंडक दूर होती है तथा बूढ़ों तथा बच्चों को फायदा होता है।

6. शहद एवं लौंग-इससे सर्दियों की सूखी खाँसी में सबसे तेज असर होता है, गले का इंफैक्शन दूर होता है तथा शरीर को गर्माहट मिलती है।

5) शहद के दुर्लभ एवं सही तथ्य-

1- शहद कभी खराब नहीं होता, यह 3000 साल बाद भी यह उपयोग योग्य पाया गया है।

2- आयुर्वेद में इसे योगवाहि कहा गया है, यानी यह दूसरी औषधियों की शक्ति बढ़ा देता है।

3- शहद शरीर से म्यूकस सहज रूप से निकालता है, इसलिए कफ का न. 1 उपाय है।

4- अगर शहद को 40 सेल्सियस से ज्यादा गर्म किया जाए तो इसके एंज़ाइम नष्ट हो जाते हैं।

5- शुद्ध देसी शहद शरीर की ओज शक्ति (Vital Energy) बढ़ाता है, जो सर्दियों में सबसे ज्यादा घटती है।

6) सेवन में सावधानी-

बहुत छोटे बच्चों (1 वर्ष से कम) को नहीं देना चाहिए, डायबिटीज पेशेंट डॉक्टर की सलाह से ही लें। थायराइड और एलर्जी वाले मरीज को मात्रा सीमित रखनी चाहिए।

7) निष्कर्ष : सर्दियों में शहद सिर्फ एक स्वाद नहीं—एक संपूर्ण औषधि है। यह शरीर को गर्म रखता है, संक्रमण से बचाता है, ऊर्जा देता है और दिमाग को शांत करता है। सही तरीके से सेवन करने पर इसके गुण दो गुना बढ़ जाते हैं और सर्दियाँ बीतती हैं मजबूत इम्युनिटी के साथ। -संकलनकर्ता : **लक्ष्मी नारायण घोडीवाल**

स्ट्रोक के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी

स्ट्रोक (लकवा/पैरालिसिस) एक अत्यंत गंभीर अवस्था है, जिसमें मस्तिष्क को रक्त की आपूर्ति अचानक बाधित हो जाती है। समय पर उपचार मिलने पर रोगी की जान बचाई जा सकती है तथा वह पूर्ण रूप से स्वस्थ भी हो सकता है। इसलिए स्ट्रोक के प्रारंभिक लक्षणों को पहचानना अत्यंत आवश्यक है।

BEFAST – स्ट्रोक को पहचानने का सबसे आसान तरीका

यदि आपके शरीर में अचानक ये संकेत दिखाई दें, तो यह स्ट्रोक के स्पष्ट लक्षण हो सकते हैं:

B – Balance (संतुलन): चलते समय अचानक बैलेंस बिगड़ जाना, चक्कर आना, शरीर अस्थिर होना।

E – Eyes (आंखें): एक या दोनों आंखों से धुंधला दिखना, अचानक नजर कम होना।

F – Face (चेहरा): चेहरे का एक हिस्सा ढीला पड़ जाना, मुस्कान असमान लगना।

A – Arms/Legs (हाथ/पांव): एक हाथ या पांव में कमजोरी, सुन्नपन या उठाने में कठिनाई।

S – Speech (बोलना): बोलने में लड़खड़ाहट, शब्द स्पष्ट न निकलना, कुछ समझ में न आना।

यदि इन संकेतों में से कोई भी अचानक दिखाई दे — तो यह स्ट्रोक का संकेत है।

T – Time (समय): अत: समय बर्बाद नहीं करें, प्रत्येक मिनट कीमती है। पीड़ित को तुरंत अस्पताल में पहुंचाए जहां न्यूरोलॉजिस्ट, इंटरवेंशनल न्यूरोलॉजी सर्जन, सीटी स्कैन व आईसीयू की सुविधा उपलब्ध हो।

ध्यान रखें — यदि मरीज 4 से 6 घंटे के भीतर अस्पताल पहुंच जाता है, तो उसके पूर्ण रूप से ठीक होने की संभावना अधिक होती है।

लकवा होने के मुख्य कारण:

डायबिटीज (मधुमेह), उच्च रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), अधिक कोलेस्ट्रॉल तथा मोटापा वाले रोगियों में स्ट्रॉक का खतरा ज्यादा रहता है।

स्ट्रोक की रोकथाम कैसे करें ?

स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर इस गंभीर बीमारी से बचा जा सकता है। साथ ही धूम्रपान, शराब एवं किसी भी प्रकार का नशा पूर्णत: छोड़ना चाहिए। नियमित तेज वॉक, जॉगिंग, योग और व्यायाम करें तथा वजन नियंत्रित रखें। बीपी, शुगर और कोलेस्ट्रॉल की नियमित जांच करवाएं। तला-भुना, अत्यधिक नमक और मीठा भोजन कम करें। तनाव कम करें और पर्याप्त नींद लें।

निष्कर्ष : स्ट्रोक एक चिकित्सकीय आपातकाल है। BEFAST के लक्षण पहचानकर समय पर चिकित्सा सहायता प्राप्त करना जीवन बचा सकता है और व्यक्ति को पूर्णत: स्वस्थ बना सकता है। जागरूकता ही स्ट्रोक से बचाव का सबसे बड़ा हथियार है।

-श्रीमती भगवती कुमावत धर्मपत्नी श्री हरिशंकर कुमावत

भक्ति है प्रेम का सर्वश्रेष्ठ रूप

पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित सिनेमा जगत ने साधारण जनमानस के लिए प्रेम की परिभाषा को ऐसा विकृत एवं संकीर्ण कर दिया कि यह मात्र दिखावा भर रह गया है। प्रेम ऐसा भाव ही नहीं है जिसका प्रदर्शन किया जा सके बल्कि यह चेतना का ऐसा स्तर (State of awareness) है, जो श्रद्धा से शुरू होता है। जिसमें Logic (तर्क- वितर्क) का नाम मात्र ही स्थान नहीं है। यह स्वयं को एवं दूसरों को देखने का एक तरीक़ा (A way of seeing oneself and others) है , यह जगत में अस्तित्व होने का एक तरीक़ा (A way of being in the world) है।

भक्ति प्रेम का ही सर्वश्रेष्ठ रूप है यही कारण है कि भक्ति में किसी प्रकार के तर्क-वितर्क (Logic) का कोई स्थान ही नहीं है तथा न ही भक्ति कोई दिखावे की वस्तु है, जैसा कि आजकल हम करते हैं। यानि भक्ति में किसी के गुण-दोषों का विश्लेषण नहीं किया जाकर सिर्फ़ गुणों का ही हमारे चित्त में स्थान देते है। भगवान गुणातीत है अत: भगवान की भक्ति को सर्वश्रेष्ठ माना गया है । इसी प्रकार माता-पिता से यदि हमें प्रेम है तो उनके दोषों पर ध्यान दिये बिना, क्यों कि माता-पिता मानवीय कृति है अत: दोष संभव है, उनके गुणों को हमेशा चित्त में रखना ही हमारा प्रेम है। यही सच्चा प्रेम माता-पिता की भक्ति है। यह सिद्धान्त मानवमात्र के लिए लागू होता है चाहे वह गुरू हो या सच्चा मित्र हो या पति-पत्नी हो।

मोरारी बापू ने कहा है, ''भगवान, माता-पिता, गुरू या जिसको भी हम बड़ा मानते है उनके द्वारा हमारे प्रति प्रेम जो कि एक भक्ति का ही रूप है, भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में कृपा कहा जाता है।'' इस प्रकार भक्ति को प्रेम का सर्वश्रेष्ठ रूप माना जाता है।

-एस आर सिंघाटिया

उडुपी में पीएम ने सुवर्ण तीर्थ मंटप का उद्घाटन किया

उडुपी में पीएम ने सुवर्ण तीर्थ मंटप का उद्घाटन किया और कनकदास से जुड़े पवित्र स्थान '**कनकना किड़ी**' के लिए स्वर्ण आवरण को समर्पित किया। पीएम ने कहा कि आज जब विश्व ने एक लाख लोगों को गीता के श्लोक एक साथ पढ़ते देखा, तो भारत की आध्यात्मिक शक्ति दुनिया के सामने आई।

स्वामी विवेकानंद: शक्ति, ज्ञान और सेवा का आह्वान

स्वामी विवेकानंद (मूल नाम नरेंद्रनाथ दत्त) भारतीय इतिहास के उन तेजस्वी व्यक्तित्वों में से एक हैं, जिन्होंने न केवल भारतीय आध्यात्म और दर्शन को विश्व पटल पर स्थापित किया, बल्कि भारत की युवा शक्ति को जागृत कर राष्ट्र के नवनिर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ था, और उनके जन्मदिन को भारत में **'राष्ट्रीय युवा दिवस'** के रूप में मनाया जाता है।

गुरु और शिकागो का विश्वव्यापी प्रभाव

तीव्र बुद्धि और गहरी जिज्ञासा वाले नरेंद्रनाथ को अपने गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस से जीवन की अंतिम सत्य की अनुभूति हुई। गुरु के मार्गदर्शन में उन्होंने संन्यास लिया और विवेकानंद नाम धारण किया।

1893 में, उन्होंने अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया। उनके भाषण की शुरुआत **''अमेरिका के मेरे भाइयों और बहनों!''** के संबोधन से हुई, जिसने श्रोताओं पर एक अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने अपने व्याख्यानों से सिद्ध कर दिया कि भारतीय दर्शन और वेदांत ही विश्व को शांति और एकता का मार्ग दिखा सकते हैं।

स्वामी जी की प्रमुख शिक्षाएँ

स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएँ केवल आध्यात्मिक सिद्धांत नहीं हैं, बल्कि ये एक शक्तिशाली, निडर और आत्मनिर्भर जीवन जीने का व्यावहारिक मार्ग हैं। उनकी शिक्षाओं का केंद्रबिंदु निम्नलिखित सिद्धांतों पर टिका है:

1. आत्म-विश्वास और शक्ति का मंत्र

स्वामी जी ने युवाओं को सबसे बड़ा मंत्र दिया: ''उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।''

- उनका मानना था कि 'स्वयं को निर्बल समझना सबसे बड़ा पाप है।' हर मनुष्य में अनंत शक्ति और दिव्यता का वास है।
- वह कहते थे, ''ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियाँ पहले से हमारी हैं।'' हमें बस अपनी आँखों से हाथ हटाकर उस अंधकार को दूर करना है जो हमने खुद पैदा किया है।

2. मानव सेवा ही ईश्वर सेवा

स्वामी जी ने वेदांत के 'अद्वैत' (सब में ईश्वर का वास) सिद्धांत को कर्मयोग से जोड़ा।

- उन्होंने 'दरिद्र नारायण' की सेवा का सिद्धांत दिया, जिसका अर्थ है कि गरीब और पीड़ित लोगों की सेवा करना ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।
- उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य मानवता की निस्वार्थ सेवा और वेदांत दर्शन का प्रचार करना था।

3. शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य

विवेकानंद जी के अनुसार, शिक्षा का अर्थ केवल जानकारी इकट्ठा करना नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करने का माध्यम है।

- शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मनुष्य में चरित्र-निर्माण, मानसिक शक्ति और आत्मविश्वास पैदा करे।

4. कर्म, भक्ति, ज्ञान और राजयोग

उन्होंने कर्म, भक्ति, ज्ञान और राजयोग (ध्यान) के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया। उनकी शिक्षाएँ सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति पर जोर देती हैं।

विरासत और प्रभाव

स्वामी विवेकानंद ने भारत के युवाओं को अपनी संस्कृति और आध्यात्म पर गर्व करना सिखाया। उन्होंने राष्ट्रवाद को आध्यात्म से जोड़ा और एक ऐसे भारत का सपना देखा जो न केवल भौतिक रूप से समृद्ध हो, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी विश्व का नेतृत्व करे।

उनका संक्षिप्त जीवनकाल (1863-1902) भारतीय इतिहास में एक अमिट छाप छोड़ गया है। आज भी उनके ओजस्वी विचार और शिक्षाएँ लाखों लोगों को अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने और एक सशक्त समाज के निर्माण के लिए प्रेरित कर रही हैं।

- रमेश गैदर

16 वर्ष से कम के बच्चों पर इंटरनेट मीडिया पर प्रतिबंध

आस्ट्रेलिया में 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों पर इंटरनेट मीडिया पर प्रतिबंध की घोषणा कर ऐसा पहला देश बन गया। अब यूट्यूब, टिकटॉक, इन्स्टाग्राम, फेसबुक जैसे 10 प्लेटफार्म को इन बच्चों के लिए ब्लॉक किया गया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि इससे बच्चों को अपना बचपन मिलेगा। अब बच्चे फोन पर समय बिताने के बजाए नये खेल शुरू करें, वाद्य यंत्र बजायें, किताबें पढ़े और दोस्तों एवं परिवार के साथ समय बिताएं। इसका अनेक नेताओं एवं संगठनों ने स्वागत किया है। अनेक देश इस तरह के कदम उठाने पर विचार कर रहे हैं तथा कुछ देशों ने इन्हें देखने का समय कम किया है। भरत में भी इस तरह के प्रतिबन्ध लगाने पर वैचारिक मंथन बुद्धिजीवियों में हो रहा है। अच्छा हो कि कुछ कदम शीघ्र उठाकर बच्चों का बचपन बचायें।

पारिवारिक मूल्य और हिन्दी फिल्में

पारिवारिक मूल्य भारतीय समाज की आधारशिला रहे हैं। परिवार केवल साथ रहने की सामाजिक इकाई नहीं, बल्कि वह संस्कार-स्थली है जहाँ मनुष्य प्रेम, सह-अस्तित्व, त्याग और कर्तव्य की अनुभूति करता है। परिवार के भीतर ही व्यक्ति संवाद करना सीखता है, असहमति को स्वीकार करता है और अपने अहं का विसर्जन कर संबंधों को बनाए रखने का अभ्यास करता है। यह वह पहला सामाजिक मंच है जहाँ 'मैं' से 'हम' की यात्रा आरंभ होती है।

पारिवारिक मूल्यों का तात्पर्य केवल परंपराओं के पालन से नहीं, बल्कि आपसी सम्मान, भावनात्मक जुड़ाव और दायित्व-बोध से है, त्याग और समर्पण पारिवारिक जीवन की अनिवार्य शर्तें हैं, क्योंकि बिना इनके कोई भी संबंध स्थायी नहीं रह सकता। परिवार व्यक्ति को यह सिखाता है कि प्रेम अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व है; और संबंध केवल अपेक्षाओं से नहीं, बल्कि समझ और संवेदना से निभाए जाते हैं।

भारतीय संस्कृति में परिवार को संस्कारों की प्रथम पाठशाला माना गया है। यहाँ जीवन के मूल नैतिक मूल्य—सहनशीलता, करुणा, सहयोग और कृतज्ञता—स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं। बदलते सामाजिक परिवेश और आधुनिक जीवन-शैली के बावजूद, पारिवारिक मूल्यों की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है, बल्कि और अधिक आवश्यक हो गई है।

अनेक महान कवियों ने परिवार और प्रेम को जीवन की सबसे बड़ी शक्ति माना है। महादेवी वर्मा लिखती हैं—

''विश्व का सबसे सुंदर संगीत माँ की लोरी है।''

यह पंक्ति परिवार में मातृत्व के स्नेह और सुरक्षा को अत्यंत सरलता से अभिव्यक्त करती है। इसी प्रकार हरिवंश राय बच्चन का यह कथन—

''घर वही है जहाँ मन को विश्राम मिले,''

इन्हीं मूल्यों को हिन्दी सिनेमा ने समय-समय पर अपने कथानकों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। हिन्दी फिल्में परिवार को केवल कथा का पृष्ठभूमि नहीं बनातीं, बल्कि उसे संवेदना, संघर्ष और प्रेम का जीवंत केंद्र बनाकर प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार हिन्दी सिनेमा पारिवारिक मूल्यों को समाज के सामने पुनःस्थापित करने का सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है। हिन्दी फिल्में इन्हीं भावनाओं को दृश्य रूप देकर दर्शकों से सीधा संवाद स्थापित करती हैं।

हिन्दी फिल्मों में पारिवारिक मूल्यों की अभिव्यक्ति

1960 और 1970 का दशक हिन्दी सिनेमा में पारिवारिक मूल्यों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और प्रभावशाली रहा है। इस काल की फिल्मों में सादगी, भावनात्मक गहराई और नैतिक चेतना प्रमुख रही। '**घराना**' और '**अनुपमा**' जैसी फिल्मों में संयुक्त परिवार, पिता-पुत्री के रिश्ते और संवादहीनता की पीड़ा को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया। **बंदिनी** में स्त्री का त्याग, प्रेम और कर्तव्यबोध मार्मिक रूप में सामने आता है। '**उपकार**' में पारिवारिक कर्तव्य, भाईचारा और सामाजिक उत्तरदायित्व को केंद्रीय स्थान दिया गया है। '**गुड्डी**' और '**कोरा काग़ज़**' जैसी फिल्में यह दर्शाती हैं कि साधारण पारिवारिक जीवन भी गहरी भावनाओं और मूल्यों से परिपूर्ण हो सकता है। यह दौर पारिवारिक आदर्शों को बिना आडंबर के प्रस्तुत करने का काल रहा है।

आधुनिक समय में भी अनेक फिल्मों ने पारिवारिक मूल्यों को मजबूत करने में अपना योगदान दिया है।

'**हम आपके हैं कौन**' रिश्तों की पवित्रता, विवाह की सामाजिक महत्ता और संयुक्त परिवार की आत्मीयता का उत्सव है। यह फिल्म दिखाती है कि प्रेम, त्याग और आपसी समझ से ही परिवार टिकता है। विवाह यहाँ केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों का मिलन है। यह विचार भारतीय पारिवारिक संस्कृति की मूल भावना को दर्शाता है।

'**कभी खुशी कभी ग़म**' परंपरा और आधुनिकता के संतुलन की कथा है। यह फिल्म बताती है कि आधुनिक सोच अपनाते हुए भी पारिवारिक मर्यादाओं और बड़ों के सम्मान को बनाए रखना आवश्यक है। अंत में परिवार का पुनर्मिलन यह सिद्ध करता है कि प्रेम और भावनात्मक जुड़ाव किसी भी अहंकार से बड़ा होता है।

माता-पिता और संतान के रिश्तों की मार्मिक प्रस्तुति '**बाग़बान**' में देखने को मिलती है। यह फिल्म बदलते सामाजिक मूल्यों के बीच बुजुर्गों की उपेक्षा की पीड़ा को उजागर करती है। यहाँ कबीर की पंक्ति स्मरणीय हो जाती है—

''जिन घर वृद्ध न पूजिए, सो घर भूत समान।''

यह फिल्म दर्शकों को अपने कर्तव्यों पर पुनर्विचार करने के लिए विवश करती है।

मध्यमवर्गीय परिवार की वास्तविकताओं को **संसार** (1987) और '**दो दूनी चार**' में अत्यंत सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया है। आर्थिक संघर्ष, सीमित संसाधन और फिर भी ईमानदारी व आत्मसम्मान—ये फिल्में बताती हैं कि पारिवारिक एकता सबसे बड़ी पूँजी है।

तपस्या त्याग और कर्तव्य के मूल्यों को केंद्र में रखती है। इसमें स्त्री के समर्पण और पारिवारिक जिम्मेदारियों का चित्रण मिलता है। यद्यपि आज इन मूल्यों पर पुनर्विचार हो रहा है, फिर भी यह फिल्म पारिवारिक ढाँचे में कर्तव्यबोध की महत्ता को रेखांकित करती है।

आधुनिक समय में **'पीकू'** पिता-पुत्री के संवेदनशील रिश्ते को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करती है, जहाँ प्रेम के साथ-साथ असहमति और स्वतंत्रता भी है। वहीं **'इंग्लिश विंग्लिश'** गृहिणी के आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की कथा है, जो यह संदेश देती है कि परिवार में हर सदस्य का सम्मान समान रूप से आवश्यक है।

हिन्दी फिल्में पारिवारिक मूल्यों का केवल चित्रण नहीं करतीं, बल्कि उन्हें जीवित रखती हैं। प्रेम, सम्मान, त्याग, संवाद और जिम्मेदारी—ये मूल्य समय के साथ रूप बदल सकते हैं, पर उनकी आवश्यकता कभी समाप्त नहीं होती। हिन्दी सिनेमा, हिन्दी कविता की तरह, परिवार को जीवन की सबसे बड़ी शक्ति मानकर समाज को संवेदनशील और मानवीय बनाने का कार्य करता रहा है।-

त्याग की नींव पर ही, घर अपना रूप पाता है,
अहं के विसर्जन से, रिश्तों में उजास आता है।
समर्पण जब मौन होकर, प्रेम में ढल जाता है,
तभी परिवार जीवन का
सच्चा संस्कार कहलाता है।

- डॉ प्रिया मारवाल, अस्सिटेंट प्रोफेसर

पुस्तक का महत्व

एक सच्चे मित्र में अनगितन किताबों का ज्ञान छुपा होता है तथा एक अच्छी पुस्तक हजार मित्रों के बराबर होती है। सच ही कहते हैं पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र होती है। मित्र वही जो हमें सच्चा ज्ञान दे, अकेलेपन में हमारा साथ दे, हमारा विकट परिस्थिति में सदैव मार्गदर्शन करे, हमारा दु:ख-दर्द बांटे, मन बहलाए और हमारी सभी समस्याओं का जिसके पास समाधान हो और ये सारे ही गुण पुस्तकों में समाहित होते हैं। दुनियाभर में लगभग लाखों विषयों पर पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, सिर्फ उन्हें पढ़ने वाला चाहिए। हमारे देश में पुस्तकों का अथाह भण्डार है। दरअसल पुस्तकें ज्ञान का समुन्दर होती है। हमारी ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका समाधान किसी ना किसी पुस्तक में ना लिखा गया हो। भारत में असंख्य छोटे-बड़े पुस्तकालय हैं जहां लाखों करोड़ों की संख्या में पुस्तकें उपलब्ध हैं। मगर आज के समय में पुस्तकों की महत्ता कम होती जा रही है। इंटरनेट के युग में पढ़ाई-लिखाई, व्यापार, रोजगार, लेन-देन, विचार-विमर्श, सूचना व संचार सब कुछ ऑनलाइन होने लगा है। इन सब परिस्थितियों के चलते आने वाली पीढ़ी पुस्तकों से दूर होती जा रही है और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि कई विद्यालयों में पूरी की पूरी शिक्षा पद्धति आज ऑनलाइन हो गई है। पहले बच्चे कॉमिक्स बड़े शौक से पढ़ा करते थे लेकिन आजकल के बहुत से बच्चों को शायद कॉमिक्स का मतलब भी पता नहीं होगा। इस प्रकार की मनोरंजक पुस्तकें बच्चों की हिन्दी व्याकरण व उच्चारण की कला को निखारने में तो मदद करती ही थी साथ ही उनमें नैतिक शिक्षा तथा मनोरंजन के साथ सामान्य ज्ञान को भी बढ़ावा मिलता था। आज हमने जन्म लेते ही बच्चे के हाथ में मोबाइल पकड़ा दिया है। आज के बच्चों में हिन्दी भाषा पढ़ने व लिखने की कितनी योग्यता है, यह तो सर्वविदित ही है। जब वर्तमान पीढ़ी की स्थिति यह है कि उन्हें हिन्दी की गिनती भी ठीक से नहीं आती तथा मात्राओं का ज्ञान तो नगण्य ही है तो ये अपनी आने वाली पीढ़ी को क्या ज्ञान दे सकते हैं ? यह सोचने वाली बात है। अब बहुत जरूरी है कि हम एक बार पुन: पुस्तकों की ओर स्वयं का तथा आने वाली पीढ़ी का रुझान बढ़ाएं। पुस्तक पर एक बहुत ही प्रेरणादायक कविता मैंने पढ़ी थी, आज उस कविता को आपके साथ साझा कर रही हूँ...

ज्ञानियों का ज्ञान है किताबें,
ज्ञान का भंडार है किताबें।
विद्वानों का मान है किताबें,
देश की शान है किताबें।
घर-घर में बसती हैं,
अलमारी के कोने में रहती है किताबें।
ना कुछ कहती है, ना कुछ लेती हैं,
बस ज्ञान ही ज्ञान देती है किताबें।
किताबों की महत्ता को समझा जिसने,
वही देश दुनिया में उन्नति कर पाया है।
मार्गदर्शन करती है हमारा रोशनी की तरह,
मानवता में आत्मा की तरह बस्ती है किताबें।

पुस्तकों के विषय में बात हो और हमारे समाज के सन्दर्भ में जिक्र नहीं किया जाए तो विषय अधूरा सा लगता है। समाज के लिए यह बहुत ही गर्व की बात है कि देशभर में हमारे समाज की अनेकों पुस्तकें प्रकाशित की जाती है। यदि समाज को विकसित करना है तो यह पुस्तक रूपी स्नेह-सेतु परस्पर बने रहना बहुत ही आवश्यक है। लोगों के विचारधाराओं को एक-दूसरे तक पहुंचाने व समाज से जुड़ी विभिन्न महत्वपूर्ण जानकारियों से सम्पूर्ण समाज को अवगत कराने में इन पुस्तकों का अमूल्य योगदान है। इन्हीं पुस्तकों के द्वारा आज हम आपस में जुड़े हुए हैं। इसके लिए समाज के सभी पत्र ट्रस्ट व समितियों तथा विभिन्न पुस्तकों से जुड़े देश भर के सभी समाज सेवकों के योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। ये सभी अलग-अलग स्थानों से महत्वपूर्ण जानकारियों का संकलन करके उन्हें पुस्तक रूपी एक माला में पिरोकर उन्हें जन-जन तक पहुंचाते हैं। यह एक बहुत ही सराहनीय सहयोग है जो समाज की एकता को बल देता है। पुस्तकों का महत्व हमारे जीवन में बाल्यकाल से वृद्धावस्था तक सदैव होता है। इस प्रकार पुस्तकें हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण तथा सच्ची मित्र है।

- उर्वशी बालोदिया

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर (स्व.)
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोड़िया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, पांचावाला, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर, झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल, टोंक फाटक, जयपुर
वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर

विशिष्ठ संरक्षक

वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुद्दीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मॅडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 श्री रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, भदाल, गोविन्दगढ़
वि/140 श्री घनश्याम खाटूवाल, ढोडसर
वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर, जयपुर
वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
वि/143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्स., जयपुर
वि/144 श्री रामेश्वर बम्बोरिया, पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर
वि/145 श्री राकेश कुमावत,(आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर
वि/146 श्री यतेन्द्र सिंह, खिरणी फाटक, जयपुर
वि/147 श्री प्रारूप कुमावत, रांकड़ी, जयपुर
वि/148 श्री शिवदयाल धुंधारिया, सीकर रोड, जयपुर
वि/149 श्री छीतरमल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/150 श्री कैलाश घोड़ावड़, सूरत
वि/151 श्री गणेश लाल कुमावत, देवी नगर, जयपुर
वि/152 श्री ओम प्रकाश वर्मा, अलथान रोड, सूरत
वि/153 डॉ. अनूप कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/154 श्री महेश जोहरी, लालकोठी, जयपुर
वि/155 श्री सोभाग्य चंद्र कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/156 डॉ. डी.एम. कुमावत, उज्जैन

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

18 नवम्बर श्रीमती फूल देवी पत्नी स्व. श्री ओम प्रकाश मारवाल, जयपुर
19 नवम्बर श्री नवल किशोर किरोड़ीवाल, पुत्र श्री सीताराम, बेगस
19 नवम्बर श्री सांवरमल बिवाल (ठेकेदार) गांव कारी
21 नवम्बर श्री बाबूलाल सारड़ीवाल, इंजीनियर्स कॉलोनी, मान्यावास
23 नवम्बर श्री मोहन लाल माचीवाल, गोविन्दपुरा, झोटवाड़ा
23 नवम्बर श्री रामदयाल देवतवाल, लालकोठी योजना, जयपुर
26 नवम्बर श्रीमती राधा देवी दोराया पत्नी स्व. श्री मदनलाल, जयपुर
27 नवम्बर श्रीमती सुषमा कुमावत (अनावडिया) पीलीखाना, सांगानेर
28 नवम्बर श्रीमती मुन्नीदेवी वर्मा रिटा. प्र.अ. पत्नी श्री राधेश्याम जालवाल, जयपुर
30 नवम्बर श्री गोपाल जी अन्यावाड़ा, चित्तौड़गढ़
1 दिसम्बर श्री दोलतराम गैदर (ठेकेदार), टोंक फाटक, जयपुर
1 दिसम्बर श्रीमती चचंल कुमावत (खण्डारिया) रामनगर वि. सोडाला
1. दिसम्बर श्री नाथूलाल जालवाल, जयपुर
2. दिसम्बर श्री हनुमान सहाय कुण्डलवाल, तिगरिया, निवाणा
2. दिसम्बर श्रीमती गोपाली देवी मामोयिा, सूरजनगर, पं. सोडाला
2 दिसम्बर श्रीमती लक्ष्मी देवी पत्नी स्व. श्री रामेदव छाबल्या, जयपुर
2 दिसम्बर श्री बांकाराम कुमावत पूर्व सरपंच, राहोली
4. दिसम्बर श्रीमती भगवती देवी पत्नी श्री चांद बिहारी डाल, जयपुर
4 दिसम्बर सुहानी पुत्री श्री चन्द्र प्रकाश देवतवाल, बूबानी
5 दिसम्बर श्रीमती बाला पत्नी स्व. श्री केसालाल देवतवाल, हिरनोदा
6 दिसम्बर श्री रामप्रताप पुत्र स्व. श्री रामबक्स सोकिल, चोमूं
6. दिसम्बर श्री ओम प्रकाश खण्डारिया, जयपुर
7 दिसम्बर श्री मन्नालाल सिरोहिया, सांगानेर
8 दिसम्बर श्रीमती नारंगी देवी पत्नी श्री सोहन सिंघाटिया, मालपुरा
11 दिसमबर श्रीमती प्रेमदेवी पत्नी स्व. श्री बाबूलाल देवतवाल, जयपुर
11 दिसम्बर श्री नरेश कुमावत पुत्र स्व. श्री घासीलाल देवतवाल, जयपुर
13 दिसम्बर श्रीमती नारायणी देवी पत्नी स्व. श्री नाथूलाल देवतवाल, जयपुर
15 दिसम्बर श्रीमती कमला पत्नी स्व. श्री फूलचंद कुण्डलवाल, इमलीफाटक, जयपुर
15 दिसम्बर श्रीमती शारदा देवी धमुनिया, गोविन्दगढ़
17 दिसम्बर श्री खेतुलाल मरेठिया (हिन्द मोटर्स) सीकर।
19 दिसम्बर श्रीमती सावित्री देवी रेवाडिया, अंचरोल
19 दिसम्बर श्री भागचंद बैरा, सुल्तान नगर, जयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी	मो. नंबर	
विनोद	B.A., B.Ed.	कनिष्ठ सहायक राज्य सरकार	6.6.86	5'5''	बागैरिया	निराणिया	भोड़ीवाल	किरोड़ीवाल	8003754916	सीकर
अंकित	Diploma Ele.Eng.	Pvt.	26.1.91	5'10''	भोड़ीवाल	दम्बीवाल	उदयवाल	धुंधारिया	9950150769	फुलेरा
ओमप्रकाश	M.Com.	Pvt. Ltd. Job	17.7.99	5'8''	बारावाल	सिरोहिया	खोरानिया	भडानिया	6367515185	जयपुर
रोहित	M.Com., ME Deploma	Pvt.Ltd. Job	21.5.97	5'8''	किरोड़ीवाल	खोरानिया	खण्डारिया	गैदर	9214915396	जयपुर
प्रशान्त	M.Com.	HR, Pvt. company	7.4.2001	5'10''	मरावण्डिया	खोरानिया	तागडा	गेदर	7976220877	जयपुर
यश	B.Tech,MBA	Manager Pvt.Ltd,	5.3.97	5'11''	तूनवाल	जलान्दरा	ब्याड़वाल	धुंधारिया	9829889959	जयपुर
नितेका	M.A.	Sales Excu. Pvt. Ltd.	2.2.97	5'9''	मारोठिया	रेनीवाल	सिरस्वा	बेडवाल	9214830148	जयपुर
आशुतोष	Diploma (Civil)	Civil Eng.	31.10.2000	5'8''	कुदाल	कुसुम्बीवाल	घोड़ेला	सिमार	9784901391	जयपुर
योगेन्द्र	B. Arch	Pvt.	22.5.97	5'8''	तुनवाल	घोडेला	किरोड़ीवाल	बबेरवाल	9636028422	जयपुर
अंश	M. Des.	Interior designor	28.1.95	5'11''	छापोला	धनारिया	–	–	9998046939	वडोदर
नीरज	Diploma, MA	Pvt. Job.	5.2.94	5'89'	तूंदवाल	भोरोदिया	भोड़ीवाल	खोवाल	9414354552	अजमेर
दिनेश	B.Sc.	Comp. Operator	15.8.2001	5'10''	बासनीवाल	राजोरिया	सोकिल	कारगवाल	8504881765	जयपुर
शंकर लाल	ITI,MA.	Pvt. Job.	5.7.97	5'7''	बासनीवाल	राजोरिया	सोकिल	कारगवाल	8504881765	जयपुर
छवीकान्त	B.Com.	Paytm Gen. Manager	20.4.96	5'8''	किरोड़ीवाल	सारड़ीवाल	कारगवाल	घोड़ेला	9351383277	जयपुर
नितिन	B.A.	Accountant	1.12.200	5'11''	बड़ीवाल	जायलवाल	मालिया	नागा	9413970811	जयपुर
राजेश	B.Sc.	Railway	S&T	5'7''	राजोरिया	जलान्दरा	राहोरिया	होदकास्या	9829011479	जयपुर
रामचन्द्र	B.A.	A.Officor in AFHQ	1.1.2000	-	राजोरिया	बासनीवाल	जेठीवाल	जोरास्या	7737087374	सीकर
राजचन्द्र	B.Tech.	Sr. Soft. Engi. MNC	15.10.94	5'11''	दम्बीवाल	किरोड़ीवाल	जाजोरा	राहोरिया	9783849914	फुलेरा
प्रशान्त	B.Tech.(CS)	Manager MNC Noida	13.7.97	5'8''	कारगवाल	मारवाल	सिरस्वा	मारोठिया	8302006516	जयपुर

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी	मो. नंबर	
ज्योती	B.Com.	--	13.2.97	5'0''	तून्दवाल	मारवाल	छापोला	सिरस्वा	9323088141	मुम्बई
डॉ. मिताली	MBBS, CS, MS	Pvt. Doctor	12.6.97	5'4''	सिरोहिया	बालोदिया	बासनीवाल	मामोडिया	9314538631	जयपुर
रेनू	Graduate	--	1.1.2001	5'1''	मारवाल	सिरस्वा	भूरोदिया	मामोडिया	979981552	सीकर
श्रृष्टि	B.A.,LLB Diploma	--	24.8.98	5'4''	भोडया	लोहरवाडिया	कलोया	धुंधारिया	9829995695	चौमूं
तरुणा	MBA.,HR Finance	Pvt. Job	1.3.97	5'4''	कुण्डलवाल	बबेरवाल	जायलवाल	कुकरवाल	9414077676	कोटा
दिक्षा	B.Com.	ICICI Bank	6.7.99	5'0''	दम्बीवाल	काम्या	खोवाल	ऊंटवाल	9896090667	हिसार
नीमिशा(मांगलिक)	M.A.(Final)	--	14.9.2000	5'3''	ब्याड़वाल	मारोठिया	होदकास्या	छापोला	9982240655	जयपुर
प्राची	M.Com.	Makeup Artist	25.10.2000	5'0''	बड़ीवाल	धीजपुरिया	कारगवाल	घोड़ेला	9214566209	फुलेरा
अदिति	B.Tech. (CS)	Sr. Engi.	16.11.97	5'5''	राजोरिया	खोवाल	जेठीवाल	घोड़ेला	9214824200	जयपुर
निकिता	M.Com. B.Ed. IT	--	1.6.96	5'3''	देवतवाल	मामोडिया	अनावडिया	मरोडिया	9828407048	जयपुर
योगिता	M. Com., MBA	Manager (Voltup)	11.7.95	4'9''	घोड़ेला	मारवाल	निमीवाल	बेडवाल	9892438999	मुम्बई
हर्षिता	M.A. (Final)	--	28.10.2002	5'6''	झुंझुनोदिया	गैदर	राहोरिया	कुदाल	9079249300	ब्यावर
भावना	B.A.	Pvt.	7.9.2000	5'2''	खोवाल	मारवाल	कारगवाल	जलान्दरा	7891590689	जयपुर
निहारिका	B.Arc. (IIT)	Apollo Designer	5.9.2000	5'6''	सारड़ीवाल	महरावंडया	खोवाल	कारगवाल	9414030084	जयपुर
कोमल	Graduate	-	3.2.2003	5'3''	मारवाल	सिरस्वा	भूरोदिया	मामोडिया	979981552	सीकर
समता	BLS, LLB	Advocate	9.2.95	5'4''	तूनवाल	नीमीवाल	छापोला	खटोड़	8378010998	मुम्बई
लीना	B.A., M.A. (Pre.)	--	12.2.2000	5'4''	जालवाल	कुण्डलवाल	सिरस्वा	मनडोवरा	9251560560	ब्यावर

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम "कुमावत इंडिया पत्रिका"

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिले तो क्या करें

'कुमावत इंडिया' पत्रिका प्रति माह 25 तारीख तक सदस्यों को डाक से भेजी जाती है। यदि 'कुमावत इंडिया' पत्रिका माह के अंत तक आपको नहीं मिले तो कृपया अपने क्षेत्र के पोस्टमैन अथवा पोस्ट मास्टर से इसकी शिकायत करें तथा हमें सूचित करें जिससे आपको सम्बन्धित अंक की प्रति पुन: भेजी जा सके। यदि शिकायत पर कोई कार्यवाही न हो तो कृपया इसकी सूचना 'कुमावत इंडिया' पत्रिका कार्यालय को दें या व्हाट्सएप नं. 9414554322 पर अपना नाम, पता मय पिनकोड लिखकर मैसेज करें। जिससे पत्रिका स्तर से भी सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस को शिकायत भेजी जा सके।

सूचना

आदरणीय समाजजनों से निवेदन है कि 'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशन हेतु सामाजिक गतिविधियों के समाचार, समाज प्रतिभाओं का विवरण व लेख आदि की जानकारी पत्रिका कार्यालय या व्हाट्सएप नं. 9414554322 या e-mailÑkumawatindiapatrika@gmail.com पर भिजवाने का कष्ट करें। सम्पादक मण्डल इन पर विचार करके इन्हें प्रकाशित कराने की कार्यवाही करेगा। आपसे निवेदन है कि प्रकाशनार्थ सामग्री मूल हो तथा पूर्व में कहीं प्रकाशित नहीं हुई हो।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सदस्यता समाप्ति सूचना

सदस्यता संख्या 5/1 से 5/40 तक के पांच वर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।

-: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में नि:शुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।**

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया,मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल, 7/218, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9549656438
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
13. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
14. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
15. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

वैवाहिक

Kundhan Kumawat

Education	:	10th
Date of Birth	:	26/12/1994
Gotra	:	Self : Khowl Nani : Khoranya Dadi : Bagranya Mother : Nemiwal
JOB PROFILE	:	Working in CMT Arts (India) Pvt. Ltd. , Jaipur
Salary	:	Rs. 25,000
PERSONAL DETAILS		
Father's	:	Shri Ramawatar Kumawat
Father Mob.	:	7976632125

654, Saket Vihar, Kishorpura Road, Hathoj, Jaipur, Rajasthan-303303 Mob.: 7877356033 (Self)

वैवाहिक

Dr. Jai kumawat

Hight	:	6ft
DoB	:	23.09.1996
Education	:	BAMS (Bachelor of Ayurvedic Medicine Surgery)
Father's name	:	Om Prakash Kumawat
Gotra	:	Self - Dewatwal Mother- Mandawara Dadi- Gaidar Nani- Ghodela
Mobile no.	:	9413232761

Plot no. 61, Shree Ganesh Colony Mahesh Nagar, Jaipur.

आकाश बालोदिया

एस.बी.आई. (राजगढ़, मध्य प्रदेश) में
जूनियर एसोसिएट के पद पर नियुक्ति होने पर बधाई

शुभेच्छु

दादा-दादी	:	मिश्रीलाल बालोदिया - स्व. मैना देवी
बड़े पापा-बड़ी मम्मी	:	अशोक-हेमलता
पापा-मम्मी	:	राजेन्द्र-उर्वशी
भाई-भाभी	:	सागर-मानसी
बहन-जीजा जी	:	अदिति-लक्ष्य जी
नाना-नानी	:	स्व.चन्द्रप्रकाश अजमेरा-स्व. निर्मला देवी
मामा-मामी	:	गौरव अजमेरा-मीनू
बहन	:	किशिका, किंजल

प्रतिष्ठानः श्रीप्रिंटिंग सेन्टर, एफ-109, करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर

प्लाट नं. 1, किसान मार्ग, टोंक फाटक, जयपुर-302015 मो. 9587852398, 9928499142, 9928499143

।। श्रद्धांजलि ।।

अनुकृति कुमावत (विन्नी)

26 नवम्बर 1996-7 दिसम्बर 2021

हम सबकी आंखों का तारा जो हमारी खुशियां की दुनिया थी,
हम सबको अकेला छोड़कर जाने कहां वाली गई.....।
हम सभी परिवारजन पुण्यतिथि पर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पिता -राकेश कुमावत, माता-मीना कुमावत, दादा-सत्यनारायण कुमावत, दादी-स्व. श्रीमती कान्ता कुमावत, भाई-आदित्य कुमावत, नाना-स्व. श्री चेतनलाल सिरोहिया, नानी-पार्वती देवी, बुआजी-फूफाजी-रेणु-चेतन जी धुंधारिया, रितु-दुष्यन्तजी, भाई-बहन-तनुज, सारा व स्वरा

निवास - एस-3बी, कबीर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर-302016 सम्पर्क सूत्र - 9460061006

36वीं पुण्यतिथि

स्व. श्री कन्हैयालाल जी आसीवाल (कुमावत)

श्रद्धावनत

गोपाली देवी (धर्मपत्नी), हरिकिशन-पुष्पा (पुत्र-पुत्रवधु),
हिमांशु-पूनम (पौत्र-पौत्रवधु), हर्षित (पौत्र), कनिष्क, भूमि (प्रपौत्री)
... एवं समस्त आसीवाल परिवार

जन्म : 1 जनवरी, 1928
स्वर्गवास : 19 जनवरी, 1980

प्रतिष्ठान : आसीवाल टायर्स
जमना कॉलोनी, तीन दुकान, सीकर रोड, जयपुर
(M) 94144-46574, 8003367742
(E) asiwaltyre@gmail.com

नव वर्ष
2026
की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

चेतन कुमावत

जिला अध्यक्ष

भाजपा ओबीसी मोर्चा, जयपुर शहर

Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

CMT ARTS INDIA PVT LTD.

MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
All kind of : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR

Since 1976

Speciality :
1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts 3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art 5. Cultured marble 6. Soft stone 7. Miniature Art

Showroom :
"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

Residence :
F-31/A, Lal Bhadhur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com

Website : www.sandalwood.cn.com

SP CONSTRUCTION

Building INDIA'S Construction

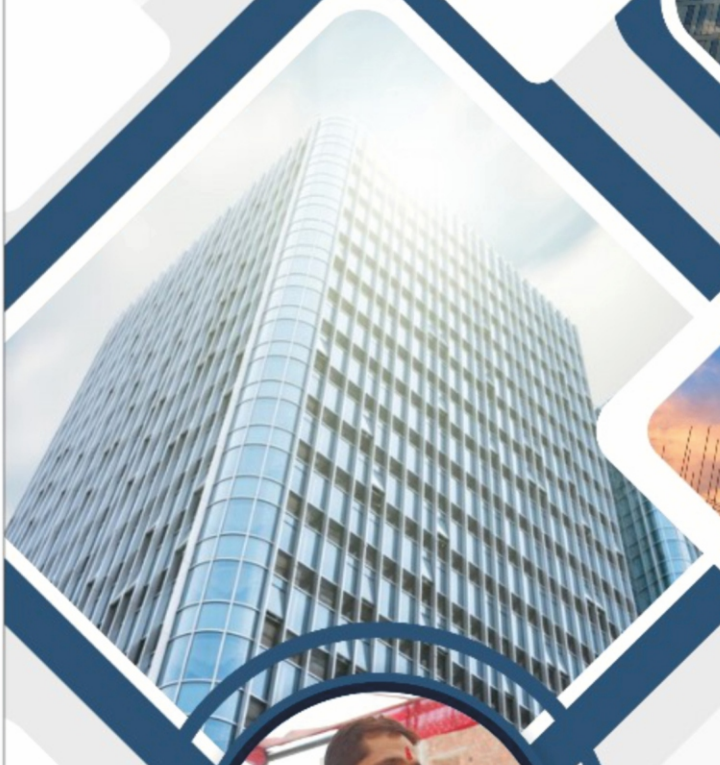

SHASHI PAL KUMAWAT

B-34, Devi Chiranjivi Colony, Surya Nagar, Gopal Pura Bye Pass, Jaipur 302015

Web: spconst.co.in E-Mail: info@spconst.co.in

ADMISSION OPEN

Vijay Anand
International Academy

Vill. AkedaChoud, Via-Jahota. Tah. Rampura Dabri, Distt. Jaipur (Raj) - 303701 Call 9460852525

Special Features

1. 100% Result
2. Centrally Air Cooled School
3. Vehicle Facility
4. Smart Classrooms
5. Highly Educated Teachers
6. International Level Syllabus
7. Worldwide Education Approaches at Home
8. Computer Coding and Programming
9. Separate Labs for Primary, Middle and Higher Classes

Nursery to X
(English Medium)

Your child deserve the Best Education

CCTV SURVEILLANCE 24X7

Director
Deendayal Kumawat

Co-ordinator
Monika Kumawat
(M.Com., B.Ed.)

Principal
Anita Chejara
(M.A., B.Ed.)

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहादुर नगर-प., दुर्गापुरा, जयपुर - 302018